सर्जना

संयुक्तांक 2019–2021

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल ,भोपाल

स्थापना 28 अगस्त 1984

वर्षा-2021

संरक्षक
डॉ. मथुरा प्रसाद
प्राचार्य एवं अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा

संपादक
पुनीता जैन

संपादक मंडल
डॉ. अंशुबाला मिश्रा
डॉ. सुषमा जादौन
डॉ. इलारानी श्रीवास्तव
प्रो. शालिनी तिवारी

सहयोग
डॉ. संजय जैन
प्रशासनिक अधिकारी

पत्र व्यवहार का पता :
बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भेल,भोपाल–462022
दूरभाष : 0755–2620133
ई मेल: hegpgcbhelbho@mp.gov.in

MANGUBHAI PATEL
Governor, Madhya Pradesh
Bhopal - 462052

सत्यमेव जयते

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल–462052

क्रमांक 712/राजभवन/2021
भोपाल दिनांक 24 नवम्बर 2021

संदेश

हर्ष का विषय है कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बी.एच.ई.एल., भोपाल द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के समग्र विकास में महाविद्यालयीन पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिकाएं विद्यार्थियों में रचनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को व्यक्त करने का मंच होती हैं। पत्रिका में ज्ञानवर्धक और उत्प्रेरक जानकारियों का समावेश विद्यार्थियों को प्रेरणा और मार्गदर्शन करता है।

आशा है, पत्रिका में बहुउपयोगी आलेखों का समावेश किया जायेगा, जिनसे विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा मिलेगी।

शुभकामनाएं!

(मंगुभाई पटेल)

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

6, श्यामला हिल्स, भोपाल–462002
दिनांक 22 नवम्बर 2021
पत्र क्रमांक 457/21

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन कर रहा है।

महाविद्यालय पत्रिकाएं विद्यार्थियों के लिए रचनात्मक प्रतिभा और अभिव्यक्ति का मंच होती हैं। पत्रिका महाविद्यालय की विविध उपलब्धियों, गतिविधियों एवं विद्यार्थियों की सर्जनात्मक प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान करती हैं।

आशा है 'सर्जना' पत्रिका उत्कृष्ट संग्रहणीय सामग्री और विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(शिवराज सिंह चौहान)

डॉ. मोहन यादव
मंत्री
उच्च शिक्षा विभाग
मध्यप्रदेश शासन

मंत्रालय : कक्ष क्र. ई–216, VB-III
भोपाल–462001
निवास : विंध्य कोठी, भोपाल
दूरभाष : 0755–2430757,
2430457 (निवास)
0755–2708682 (मंत्रालय)
ई–मेल : mohan.yadav@mpvidhansabha.nic.in
drmyadavujn@gmail.com

पत्र क्रमांक 1560, दिनांक 27.11.21

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और प्रतिभा का दर्पण होती है। उनकी सृजनात्मक प्रतिभा का मंच पत्रिका बने, मेरी यही आकांक्षा है।

पत्रिका 'सर्जना' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. मोहन यादव)

कृष्णा गौर
विधायक
154–गोविंदपुरा, भोपाल
एवं प्रदेश मंत्री भाजपा
प्रदेश प्रभारी महिला मोर्चा

(कार्या./नि/.) : 0755–2441578
krishnagaur2015@gmail.com
निवास : बी–6, स्वामी दयानन्द नगर
74, बंगला, भोपाल (म.प्र.) 462003

क्रमांक 5391
दिनांक 29.11.2021

संदेश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल की वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रत्येक महाविद्यालय की अपनी एक पहचान होती है, यह पत्रिका उस पहचान से हमारा साक्षात्कार कराती है।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति की वाहक बने, इसी कामना के साथ मेरी ओर से पत्रिका के प्रकाशन एवं विमोचन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(कृष्णा गौर)

अनुपम राजन
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव

म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग
मंत्रालय : वल्लभ भवन-III, द्वितीय तल,
डी–विंग, कक्ष क्रमांक–डी 247
भोपाल–462001
निवास : विंध्य कोठी, भोपाल
दूरभाष : (कार्या.) 0755–2708640
ई–मेल : pshinghedu@mp.gov.in

पत्र क्रमांक 1885/1150/21/38–2
दिनांक 01.12.2021

संदेश

यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हुई कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल की वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन किया जा रहा है।

अकादमिक उपलब्धियों और विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा व संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए वार्षिक पत्रिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। आपकी पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

Rajan

(अनुपम राजन)

विनीत तिवारी
एस.डी.एम.
पदेन अध्यक्ष
जनभागीदारी समिति

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष हुआ कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल की वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का संयुक्तांक प्रकाशित हो रहा है। महाविद्यालय के विद्यार्थी उच्च शिक्षा के साथ–साथ साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं । यह पत्रिका उनकी बहुमुखी प्रतिभा को एक आकार प्रदान करे, मेरी यही शुभकामना है।

(विनीत तिवारी)

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय

प्रो. आर. जे. राव
कुलपति

भोपाल – 462026 मध्यप्रदेश (भारत)
E-mail : buvcmp@ni.in, rjrao09@gmal.com

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल, महाविद्यालयीन पत्रिका 'सर्जना' का प्रकाशन कर रहा है।

विद्यार्थियों की उपब्धियों, साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए 'पत्रिका' की महती भूमिका है। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

RJ Rao

(प्रो. आर. जे. राव)

अनुक्रम

- ✠ प्राचार्य की कलम से 11
- ✠ सम्पादक की ओर से..... 12
- ✠ जिनकी स्मृति में महाविद्यालय का नामकरण हुआ... 13
- ✠ महाविद्यालय भवन निर्माण की विकास यात्रा 14
- ✠ महाविद्यालय : एक नजर में 17
- ✠ महाविद्यालयीन प्रतिवेदन – 18
- ✠ छात्र हित में उच्च्व शिक्षा विभाग, जनभागीदारी एवं विश्व बैंक परियोजना द्वारा किए गए कार्य – 23
- ✠ **प्रतिवेदन–**
  - ■ स्ववित्तीय पाठ्यक्रम 26
  - ■ विभागीय प्रतिवेदन 29
  - ■ विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रम विषयक व अन्य प्रतिवेदन 41
- ✠ **विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति –**
  - ■ महिला सशक्तीकरण : वर्तमान परिदृश्य 45
  - ■ हिन्दी : वर्तमान परिदृश्य 46
  - ■ गठरी 48
  - ■ बापू / मुस्कान 50
  - ■ माँ 50
  - ■ एक छोटी सी आवाज हूँ मैं 51
  - ■ सफलता ही हैं मंजिल/शिक्षा का वरदान 51
- ✠ **प्राध्यापकों की रचनाएँ –**
  - ■ साहित्य और समाज का अंतरसम्बंध 52
  - ■ आदिवासी भाषा, संस्कृति तथा विकास की चुनौतियां 54
  - ■ मन की खिड़की 57
  - ■ The Secret of Success 57
  - ■ Positive Thinking - A Need of an Hour 58
  - ■ "Food for Thought" 59
  - ■ कौन है वह 59
  - ■ Concrete Boundaries Around Trees Uprooting The City's Green Cover? 60
  - ■ भारत में लिंग विभेदीकरण का स्वरूप 60
  - ■ Role of Healthy Diet in Determining Moral Values 62
  - ■ Contribution of Indian Mathematicians to Mathematics 63
- ✠ **महाविद्यालयीन परिवार** 64

प्राचार्य की कलम से

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल का प्रतिष्ठित सहशिक्षा महाविद्यालय है। महाविद्यालय में विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय का अध्यापन किया जाता है। स्ववित्तीय पाठ्यक्रम कम्प्यूटर एप्लीकेशन, ट्रेवल एंड टूरिज़्म, बायोटॅक्नोलॉजी, पोषण एवं आहार विज्ञान एवं होटल मैनेजमेंट जैसे रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम भी संचालित है। वाणिज्य, वनस्पति शास्त्र, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएँ संचालित होती हैं। लगभग दो हजार चार सौ छात्र/छात्राएँ इस महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं। विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और शैक्षणिक विकास के लिए अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। युवा उत्सव, वार्षिकोत्सव जैसे कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की नृत्य, गायन, वक्तृता कला जैसी प्रतिभा निखरती है तो खेलकूद के माध्यम से अनेक खेलों में स्तरीय खिलाड़ी तैयार होते हैं।

म.प्र. शासन, उच्चशिक्षा विभाग की समस्त हितग्राही योजनाओं का लाभ उठाकर छात्र/छात्राएँ अपने संपूर्ण विकास का प्रयास कर रहे हैं। महाविद्यालय के विकास में समस्त प्राध्यापक एवं कार्यालयीन कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

महाविद्यालय में एन.सी.सी., एन.एस.एस. और कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ छात्रहित में कार्य कर रहा है। महाविद्यालय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभाओं को मंच देने के लिए वार्षिक पत्रिका 'सर्जना' का संयुक्तांक प्रकाशित कर रहा है। मैं विद्यार्थियों की प्रतिभा, उनकी संवेदना और सृजनात्मक क्षमता से अत्यधिक प्रसन्न हूँ। राष्ट्र–निर्माण में यही युवा विद्यार्थी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने में महाविद्यालय निरंतर प्रयासरत है । यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में अग्रणी राज्य है। हमारा महाविद्यालय इस दिशा में अपनी भूमिका निर्वहन हेतु तत्पर है।

डॉ. मथुरा प्रसाद

सम्पादक की ओर से.....

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधकार से प्रकाश की ओर गमन' – यह भारतीय मानस की सांस्कृतिक चेतना का वह वैशिष्ट्य है, जिसने उसे एक क्रूर महामारी से संघर्ष और उससे मुक्त होने की जीवट इच्छा शक्ति और अथक जिजीविषा प्रदान की है। इस कठिन दौर में हमारी शिक्षा–व्यवस्था ने तकनीक आधारित और आभासी होकर देश के भावी नागरिक अर्थात् विद्यार्थियों से अनवरत रूप से संबंध बनाए रखा है। यह देश की शिक्षा–व्यवस्था की महती उपलब्धि है कि इसी कठिन–यात्रा में हमें 'नयी शिक्षा नीति 2020' प्राप्त हुई तथा मध्यप्रदेश शासन इस शिक्षा नीति को लागू करने में अग्रणी रहा। हमारे महाविद्यालय ने इन विपरीत परिस्थितियों में भी अपने कदम रूकने नहीं दिए। सतत कर्मनिष्ठा का ही परिणाम है कि नयी शिक्षा प्रणाली, नये सत्र, नये भवन और नये नाम के साथ यह महाविद्यालय नये लक्ष्यों की ओर कदम बढ़ा चुका है। 'सर्जना' पत्रिका के संयुक्तांक का प्रकाशन इसी यात्रा का एक पड़ाव है । महाविद्यालय के स्वरूप, विविध योजनाओं, शैक्षणिक व शैक्षणेत्तर गतिविधियों, उपलब्धियों और प्रतिभा को प्रस्तुत करने का यह एक संक्षिप्त प्रयास है। विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा की कतिपय झलक इस प्रस्तुति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जो निश्चित ही छात्रों हेतु प्रेरणास्पद सिद्ध होगा।

'सर्जना' को आकार देने हेतु जहाँ शुभकामनाओं ने प्रेरणा प्रदान की है, वहीं प्राचार्य महोदय के समुचित मार्गदर्शन व महाविद्यालय परिवार के सहयोग ने सार्थक योगदान दिया है। यहाँ कृतज्ञता केवल औपचारिकता नहीं, सामूहिक प्रयास के प्रति विश्वास भी है। विश्वास इस बात का भी है कि आगामी समय में महाविद्यालय की विकास–यात्रा नये आयाम प्राप्त करेगी तथा 'सर्जना' और अधिक समृद्ध रूप में आपके सम्मुख होगी ।

शुभकामनाओं सहित,

–पुनीता जैन

जिनकी स्मृति में महाविद्यालय का नामकरण हुआ...

(भूतपूर्व मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश)

स्व. श्री बाबूलाल गौर जी

जन्म : 2 जून 1930 ● निधन : 21 अगस्त 2019

जन्म स्थान – ग्राम.नौगीर, जिला प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

शैक्षणिक योग्यता –बी.ए.,एल.एल.बी.

कर्मयात्रा – गोवा मुक्ति आंदोलन हेतु सत्याग्रह, 1946 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक, 1948 से श्रम संघ गतिविधियों में संलग्न भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक सदस्य। 1951 से भारतीय जनसंघ में सक्रिय, दिल्ली में बेरूवाडी, बंगला देश, पंजाब आदि सत्याग्रहों में भागीदारी। टेक्सटाइल स्टाफ एसोसिएशन, हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि., पुट्ठा मिल, एच.आई.जी. कर्मचारी संघ के अध्यक्ष एवं अन्य पदों पर कार्य। 27 जून, 1975 को आपातकाल के विरोध में भोपाल में सत्याग्रह किया और मीसा में गिरफ्तार हुए । आपातकाल में 19 माह का कारावास । 1974 के उपचुनाव में पांचवीं, 1977 में छठवीं, 1980 में सातवीं, 1985 में आठवीं, 1990 में नौवीं, 1993 में दसवीं एवं 1998 में ग्यारहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित, नौवीं विधान सभा के कार्यकाल में 7 मार्च, 1990 से दिसंबर 1992 तक मंत्री, स्थानीय शासन, विधि एवं विधायी कार्य, संसदीय कार्य, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास, जनसम्पर्क एवं नगरीय कल्याण विभाग रहे, 1974 में म.प्र. शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में सम्मानित, दैनिक नई दुनिया, भोपाल द्वारा जनमत संग्रह के आधार पर सन् 1991 में 'वर्ष श्री'की उपाधि. दसवीं विधान सभा अवधि में भा.ज.पा. विधायक दल के मुख्य सचेतक एवं लोक लेखा समिति के सभापति, म.प्र. विधान सभा की पत्रिका 'विधायिनी' में लेखों का निरंतर प्रकाशन। 1989 में रूस, 1991 में श्रीलंका एवं 1998 में ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी, आस्ट्रिया, बेल्जियम एवं हॉलैण्ड की यात्रा। ग्यारहवीं विधान सभा अवधि में 4 सितम्बर, 2022 से 5 दिसम्बर, 2003 तक नेता प्रतिपक्ष, म.प्र. विधान सभा रहे। अगस्त, 2003 में विधान सभा सचिवालय द्वारा 'उत्कृष्ट सेवा सम्मान' से सम्मानित हुए।

सन् 2003 में बारहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित एवं मंत्री, नगरीय प्रशासन एवं विकास, आवास एवं पर्यावरण, विधि एवं विधायी कार्य, श्रम, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास तदन्तर, विधि, गैस राहत एवं 23 अगस्त, 2004 से 28 नवंबर, 2005 तक मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश रहे। मंत्री, वाणिज्यिक कर, वाणिज्य, उद्योग और रोजगार, सार्वजनिक उपक्रम भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास रहे। सन् 2008 में तेरहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित एवं मंत्री, वाणिज्यिक कर, सार्वजनिक उपक्रम रहे। सन् 2013 में दसवीं बार, चतुर्दश विधान सभा हेतु सदस्य निर्वाचित एवं दिनांक 30 जून, 2016 तक मंत्री, गृह एवं जेल विभाग रहे। **इस महाविद्यालय के भवन निर्माण हेतु भेल प्रशासन, म.प्र. शासन, महामहिम राज्यपाल, केन्द्र शासन स्तर पर आपने सक्रिय एवं सार्थक प्रयास किए जिसके परिणाम स्वरूप भवन निर्माण हो सका, महाविद्यालय परिवार सदैव कृतज्ञ रहेगा।**

महाविद्यालय भवन निर्माण की विकास यात्रा

26.08.1984 — क्षेत्रीय रहवासियों की मांग पर भेल क्षेत्र में म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रारंभ इस महाविद्यालय के उद्घाटन अवसर पर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अर्जुन सिंह द्वारा आश्वासन दिया गया कि यदि भेल प्रशासन इस महाविद्यालय के लिए भवन निर्मित कर देता है तो निर्माण की लागत का 50 प्रतिशत शासन वहन करेगा।

13.1 1.1984 — आयुक्त उच्च शिक्षा द्वारा समूह महाप्रबंधक भेल भोपाल को पत्र –

भेल प्रशासन द्वारा महाविद्यालय के सुरक्षित 25 एकड़ भूमि के भूखण्ड का समतलीकरण कराकर 50 प्रतिशत राशि का म.प्र.शासन द्वारा वहन करने बाबत्।

09.01.1985 — श्री अशोक वाजपेयी द्वारा समूह महाप्रबंधक भेल को पत्र –

महाविद्यालय में प्रायोगिक कक्षाओं के लिए अतिरिक्त स्थान देने तथा भेल प्रशासन द्वारा प्राचार्य को मुख्य भवन के निकट एक छोटा ब्लॉक उपलब्ध कराने के वचन का क्रियान्वयन बाबत। महाविद्यालय में लगभग 70 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी भेल प्रशासन के, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के अध्ययनरत है'।

15.05.1985 — एन.के. सक्सेना उपप्रबंधक भेल भोपाल का श्री भारतेन्द्र सिंह बासवान आयुक्त उच्चशिक्षा को पत्र तथा प्रतिलिपि उप सचिव, उच्चशिक्षा।

1. दिनांक 16 अप्रैल 1985 को माननीय मंत्री जी एवं समूह महाप्रबंधक, उपमहाप्रबंधक तथा प्राचार्य भेल की उपस्थिति में हुई बैठक के अनुसार माननीय मंत्री जी ने महाविद्यालय के लिए दिये गये भवन का किराया तय करने व उसका शीघ्र भुगतान करने बाबत् सलाह दी थी ।
2. इस मामले को यथाशीघ्र तय करने की मंशा।
3. इस बैठक में भेल के सदस्यों ने महाविद्यालय से संबधित सरकारी प्रतिष्ठानों पर लागू होने वाले बी.पी.ई. नार्म्स के बारे में अवगत कराया तथा भेल प्रशासन द्वारा महाविद्यालय के लिए मदद न कर पाने की असमर्थता को सबने समझा।

16.9.1985 — अतिरिक्त संचालक उच्चशिक्षा द्वारा प्राचार्य को पत्र –

भवन किराया बाबत् अनुबंध निष्पादित किये जाने हेतु शासन की ओर से प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय भेल को अधिकृत किया गया।

माननीय उच्चशिक्षा मंत्री के कक्ष में 16 अप्रैल 1985 को भेल प्राधिकारियों के साथ हुई चर्चा के अनुसार यह मान्य किया गया था कि प्रथम वर्ष भवन किराया दिया जाय । इसके पश्चात् नॉमिनल रेंट 1/– (एक रूपया मात्र) केवल किराया दिया जाए।

08.07.1987 — प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय भेल द्वारा समूह महाप्रबंधक भेल भोपाल को पत्र –

महाविद्यालय भवन के लिए उपयुक्त स्थान पर लगभग 10 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने बाबत् ।

02.01.1990 — उपमहाप्रबंधक भेल द्वारा प्राचार्य को पत्र –

1. महाविद्यालय वर्तमान में होस्टल नंबर 1 में संचालित है अन्य संगठनों द्वारा कमरे रिक्त करने पर महाविद्यालय को मिल जाएंगे।
2. भेल क्षेत्र में 20 एकड़ भूमि आवंटन के संदर्भ में सूचित किया गया कि भेल भूमि अभ्यर्पित करने की स्थिति में नहीं है।
3. भेल को नई परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए भूमि की आवश्यकता होगी।

चाहे जिंदगी जितनी भी कठिन लगे आप हमेशा कुछ न कुछ कर सकते हैं और सफल हो सकते हैं – स्टीफन हॉकिंग

09.03.1990 — प्राचार्य द्वारा उपमहाप्रबंधक भेल प्रशासन को पत्र —

महाविद्यालय भवन निर्माण हेतु भू आवंटन बाबत्।

दिसम्बर 1987 में तत्कालीन उच्चशिक्षा मंत्री माननीय श्री चित्रकांत जायसवाल ने अतिरिक्त कमरों एवं भूमि आवंटन की मीटिंग बुलवाई थी।

आपके तत्कालीन कार्यपालक निदेशक श्री सर्राफ अन्य अधिकरियों के साथ उपस्थित हुए।

27.09.1991 — प्राचार्य द्वारा समूह महाप्रबंधक भेल भोपाल को पत्र एवं प्रतिलिपि प्रमुख सचिव, आयुक्त उच्चशिक्षा, विधायक गोविन्दपुरा, आयुक्त भोपाल संभाग को पत्र।

भेल प्रशासन द्वारा महाविद्यालय को अब तक उपलब्ध कराये स्थान के प्रति महाविद्यालय आभारी है।

फिर भी महाविद्यालय के अनुरूप वर्तमान जगह पर्याप्त नहीं है।

भूमि आवंटन के लिए भेल प्रशासन की ओर से कोई कार्यवाही नहीं।

वर्तमान में लगभग 1000 विद्यार्थी अध्ययनरत है। फिर भी जगह 250—300 विद्यार्थियों की ही है।

02.03.1994 — प्राचार्य द्वारा महाप्रबंधक कार्मिक एवं प्रशासन भेल भोपाल को पत्र —

6 नवम्बर 1993 को महाविद्यालय के शपथ ग्रहण समारोह में आपने चेतक ब्रिज के पास की भूमि को इस महाविद्यालय के लिए आवंटित करने का आश्वासन दिया था।

थ्रिफ्ट सोसायटी के आवंटित कमरों को महाविद्यालय को प्रदान करने का निवेदन ।

19.10.1994 — प्राचार्य द्वारा कार्यपालक निदेशक भेल भोपाल को पत्र —

छात्र संघ द्वारा महाविद्यालय भवन निर्माण के लिए 11.10.1994 को अनिश्चितकालीन हड़ताल अतः देहली कारपोरेट ऑफिस से शीघ्र इस संबंध में स्वीकृत कराने का अनुरोध।

हालत की गंभीरता को देखते हुए व छात्र समस्या निराकरण हेतु आश्वासन पत्र प्रेषित करने का अनुरोध।

30.1 1 .1995 — प्राचार्य द्वारा कार्यपालक निदेशक भेल भोपाल को पत्र —

महाविद्यालय भवन हेतु जम्बूरी मैदान के निकट 1 0 एकड़ भूमि आवंटन का प्रस्ताव अपने कारपोरेट ऑफिस देहली में स्वीकृति हेतु लंबित है।

प्रस्ताव को शीघ्र मंजूरी दिलाने हेतु निवेदन।

10.1 1.1998 — प्राचार्य द्वारा कार्यपालक निदेशक, भेल, भोपाल को पत्र —

जनभागीदारी समिति की सामान्य परिषद् की बैठक में भेल प्रशासन द्वारा सहयोग की अपेक्षा।

बढ़ती हुई विद्यार्थी संख्या के आधार पर महाविद्यालय भवन के समीपस्थ भवन भी महाविद्यालय को उपलब्ध कराने का निवेदन।

26.06.1999 — अध्यक्ष जनभागीदारी समिति द्वारा कार्यपालक निदेशक, भेल, भोपाल को पत्र —

महाविद्यालय की वर्तमान उपलब्धियों, स्थिति एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अधीनस्थों के बच्चों के कल्याण हेतु महाविद्यालय के लिए व्यक्तिगत रूचि रख कर भूखण्ड उपलब्ध कराने की दिशा में सार्थक प्रयास का अनुरोध ।

वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में, रखते हुए जब तक भूखण्ड आवंटन नहीं होता तब तक महाविद्यालय के समीपस्थ भवन को इस महाविद्यालय को उपयोग करने हेतु प्रदान करें।

महाविद्यालय के विकास द्वारा जनकल्याण हेतु त्वरित सार्थक पहल का अनुरोध ।

30.11.2003 — भेल प्रशासन द्वारा पूर्व टेगौर मिडिल स्कूल भवन, इस महाविद्यालय को किराए पर उपलब्ध कराया गया जिसका कुल क्षेत्रफल 23.146.85 वर्ग फिट है जिसमें व्याख्यान हेतु मात्र 7 कक्ष हैं, 1 हाल शेष स्थान कार्यालय, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला के लिए उपयोग किया जाता है।

10.08.2007 — कार्यालय आयुक्त उच्चशिक्षा म.प्र. शासन द्वारा कलेक्टर भोपाल को महाविद्यालय को 10 एकड़ भूमि आवंटन हेतु पत्र।

23.09.2008 — प्राचार्य द्वारा कलेक्टर भोपाल को 10 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने हेतु पत्र।

29.10.2011 — माननीय श्री बाबूलाल गौर जी मंत्री नगरीय प्रशासन विकास भोपाल गैस त्रासदी राहत पुनर्वास विभाग म.प्र.शासन द्वारा महाविद्यालय का अवलोकन।

09.05.2012 — माननीय श्री बाबूलाल गौर जी मंत्री नगरीय प्रशासन विकास भोपाल गैस त्रासदी राहत पुनर्वास विभाग, म.प्र. शासन द्वारा भेल क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण संबधी बैठक के अवसर पर महाविद्यालय की समस्याओं की ओर भेल प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराया ।—

02.03.2013 — प्राचार्य द्वारा कलेक्टर भोपाल को दिनांक 23/11/2012 को माननीय मुख्यंमत्री जी द्वारा समीक्षा बैठक के बिंदु क्रमांक 11 में भूमिहीन महाविद्यालयों को यथाशीघ्र भूमि आवंटन के परिप्रेक्ष्य में कार्यवाही बाबत पत्र।

19.10.2015 — कार्यालय आयुक्त, उच्चशिक्षा द्वारा प्राचार्य भेल को भेल प्रबंधन से संपर्क कर लीज पर भूमि आवंटित कराने हेतु पत्र।

31.03.2017 — कार्यालय परियोजना संचालक द्वारा पत्र क्रमांक एफ38—76/2017/कॉलेज/विश्व बैंक/उच्चशिक्षा/कार्य—3पीडी/525 द्वारा विश्वबैंक परियोजना के तहत 50, भवन विहीन विद्यालय को भवन निर्माण हेतु 650 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति इस महाविद्यालय को प्रदान किये जाने संबंधी संभागीय परियोजना यंत्री लोकनिर्माण विभाग को पत्र।

28.02.2018 — पूर्व मुख्यमंत्री एवं गोविन्दपुरा विधायक, माननीय श्री बाबूलाल गौर जी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल जिसमें पूर्व महापौर श्रीमती कृष्णा गौर, एम.आई.सी.सदस्य श्री केवल मिश्र, प्रभारी प्राचार्य डॉ आर.के. खजवानिया जनभागीदारी प्रभारी डॉ. संजय जैन सदस्य रूपेश दीक्षित महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल से मिला तथा उन्हें विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत स्वीकृत राशि की जानकारी देते हुए भेल प्रशासन से 10 एकड़ भूमि या वर्तमान परिसर में भवन निर्माण की अनुमति प्रदान किए जाने हेतु अनुरोध किया।

06.10.2018 — जनभागीदारी अध्यक्ष, माननीय श्रीमती कृष्णा गौर के द्वारा महाविद्यालय में भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया।

28.09.2021 — म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग मंत्रालय के आदेश क्रं. 1551/1426/2020/38—2 दिनांक 28/09/2021 द्वारा इस महाविद्यालय का नाम 'बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय', भेल भोपाल किया गया।

प्रस्तुतकर्ता – डॉ. संजय जैन

महाविद्यालय : एक नजर में

- म.प्र. शासन, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा 28 अगस्त 1984 से भेल उद्योग नगरी में संचालित यह एक मात्र शासकीय महाविद्यालय है, जिसमें कला, विज्ञान और वाणिज्य तीनों संकाय में स्नातकोत्तर स्तर तक सह शिक्षा प्रदान की जाती है एवं बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल में पीएच.डी.की उपाधि हेतु शोध केन्द्र भी है।
- इस महाविद्यालय को सन् 2017 में नेक (NAAC) मूल्यांकन में B++ ग्रेड प्राप्त है।
- म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग से अनुमति प्राप्त और बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से सम्बद्ध पांच रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम स्ववित्तीय आधार पर जनभागीदारी के तत्वावधान में संचालित हैं। पी.जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट, बी.कॉम. ट्रेवल टूरिज्म, बी.कॉम कम्प्यूटर एप्लीकेशन, बी.एससी. बायोटेक्नोलॉजी बी. एससी, सी.एन.डी. इनमें अध्ययन कर देश एवं विदेश में छात्र–छात्राएं अपना कॅरियर बना रहे हैं।
- महाविद्यालय में विद्यार्थियों को एक निर्धारित गणवेश में आने तथा अपना परिचय पत्र सदैव साथ रखने का प्रावधान है।
- यह महाविद्यालय म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल का अध्ययन केन्द्र भी है जिसमें दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्नातक/स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रमों का अध्ययन किया जा सकता है।
- इस महाविद्यालय में उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन द्वारा छात्रहित में संचालित विभिन्न हितग्राही योजनाओं का लाभ भी नियमित विद्यार्थी पात्रता होने पर प्राप्त कर सकता है– जैसे मुख्यमंत्री मेधावी छात्र योजना, असंगठित कर्मकार योजना, गांव की बेटी, मुख्यमंत्री कल्याण योजना, प्रतिभा किरण आदि।
- अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्र–छात्राओं को निःशुल्क स्टेशनरी एवं पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।
- म.प्र.शासन, उच्च शिक्षा विभाग की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएं भी इस महाविद्यालय में प्रभावशील है– जैसे पोस्ट मेट्रिक, आवास सहायता योजना, सेन्ट्रल सेक्टर (अल्पसंख्यक/विकलांग) केवल एस.सी.एसटी।
- महाविद्यालय में विभिन्न विषयों की 29,269 पुस्तकों से समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें संदर्भ ग्रंथ भी है। यह पुस्तकालय पूर्ण ऑटोमेटिक है, साथ ही ई–लाइब्रेरी की सुविधा भी उपलब्ध है जिससे पासवर्ड के माध्यम से विद्यार्थी ऑनलाइन किसी भी समय स्नातक स्तर की पुस्तकों का अध्ययन घर बैठकर कर सकता है।
- शैक्षणेत्तर गतिविधियों के अंतर्गत महाविद्यालय में एन.सी.सी., एन.एस.एस. की इकाइयाँ सक्रिय रूप से कार्यरत हैं, क्रीड़ा विभाग में जूडो, बैडमिंटन, व्हालीवाल, टेबिल टेनिस, बेसवाल, शतरंज, खो–खो, कबड्डी, क्रिकेट, फुटबाल, तैराकी, वेटलिफ्टिंग इत्यादि गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा के विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं।
- महाविद्यालय में प्रतिवर्ष म.प्र.शासन, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा घोषित अकादमिक कलेण्डर का पूर्ण प्रतिबद्धता से पालन किया जाता है जिसमें प्रवेश परीक्षा, आंतरिक मूल्यांकन, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा सम्बंधी गतिविधियां शामिल होती हैं।
- महाविद्यालय में नियमित विद्यार्थियों को ऑनलाइन शुल्क जमा करने की सुविधा भी उपलब्ध है। इस हेतु लिंक इस प्रकार है– **https://www.onlinesbi.com/sbicollect/icollecthome.htm?corpID=2957356.**
- म.प्र. शासन, उच्च शिक्षा विभाग मंत्रालय द्वारा 28 सितम्बर 2021 को इस महाविद्यालय का नाम परिवर्तित करते हुए 'बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल भोपाल' किया गया।

महाविद्यालयीन प्रतिवेदन

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल की स्थापना 28 अगस्त 1984 को हुई। वर्तमान में यह महाविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा B++ ग्रेड प्राप्त है। इस महाविद्यालय में एक साथ कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों संकाय संचालित हैं। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को दृष्टि में रखते हुए अधिक से अधिक संख्या में 'नयी शिक्षा नीति 2020' से छात्रों को लाभान्वित करने हेतु यह महाविद्यालय कटिबद्ध है। महाविद्यालय मूल्य आधारित एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा को आधार बनाकर विभिन्न शैक्षणिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों को संचालित करता है।

महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्रारंभ पर सन् 2020 में ऑनलाइन इंडक्शन प्रोग्राम एवं 20 21 में प्रवेशोत्सव के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं से छात्रों को अवगत कराया गया। इन योजनाओं के अन्तर्गत गाँव की बेटी योजना, प्रतिभा किरण योजना, SC/ST/OBC/ सेंटर सेक्टर, एकीकृत छात्रवृत्ति, निःशुल्क छात्रवृत्ति तथा बीड़ी श्रमिक श्रम कल्याण, मुख्यमंत्री मेधावी योजना, असंगठित कर्मकार की जानकारी विद्यार्थियों को दी गई।

इसके अतिरिक्त आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) सांस्कृतिक / साहित्यिक / युवा उत्सव, वार्षिक स्नेह सम्मेलन, कॅरियर गाइडेंस एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ, NSS / NCC / रेड रिबन / विभागीय अभिनव योजनाएँ एवं छात्रवृत्ति सम्बंधी जानकारी विभिन्न समितियों द्वारा विद्यार्थियों को दी जाती है। रूसा (विश्व बैंक पोषित) के अन्तर्गत रेमेडियल कक्षाओं के द्वारा विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं। आगे विद्यार्थियों विषयक जानकारी निम्नानुसार दर्शायी गई है–

- विद्यार्थी संख्या वर्षवार
- विद्यार्थी संख्या संकायवार
- परीक्षा परिणाम 2019–20
- परीक्षा परिणाम 2020–21

✠ विद्यार्थी संख्या वर्षवार

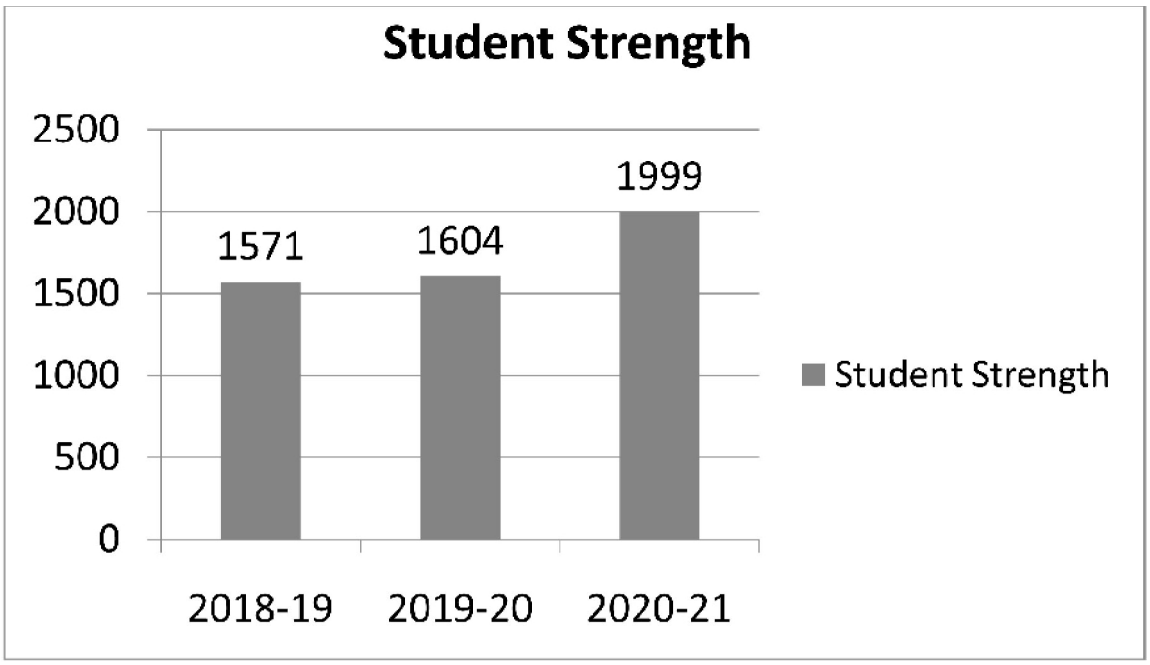

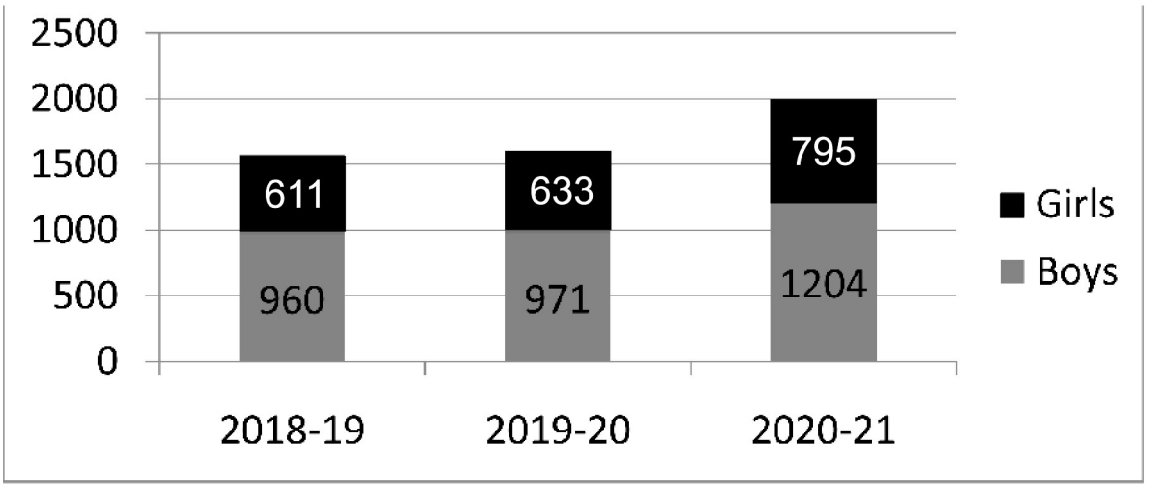

वर्ष	कुल संख्या	छात्र	छात्रा
2018–19	1571	287	738
2019–20	1604	971	633
2020–21	1999	1204	795

✠ विद्यार्थी संख्या संकायवार

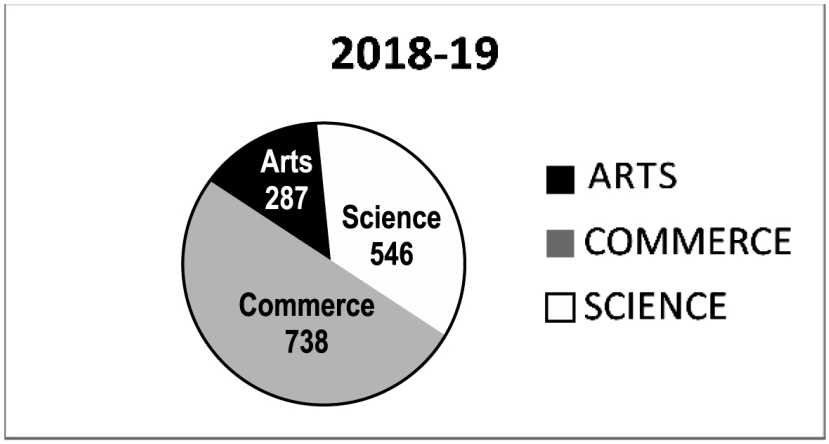

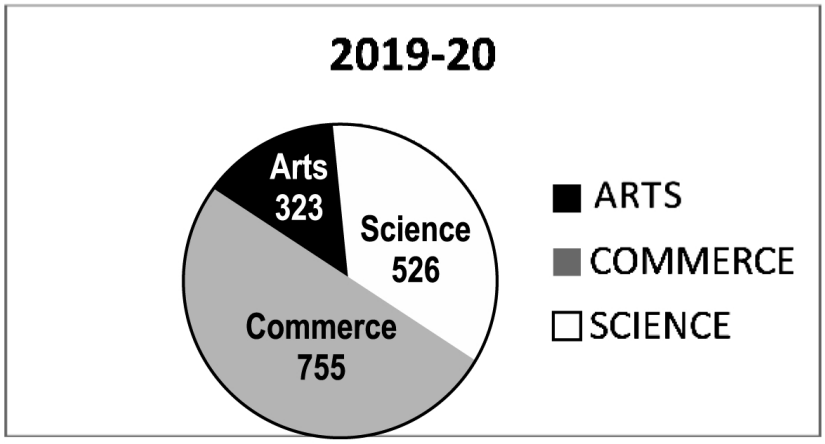

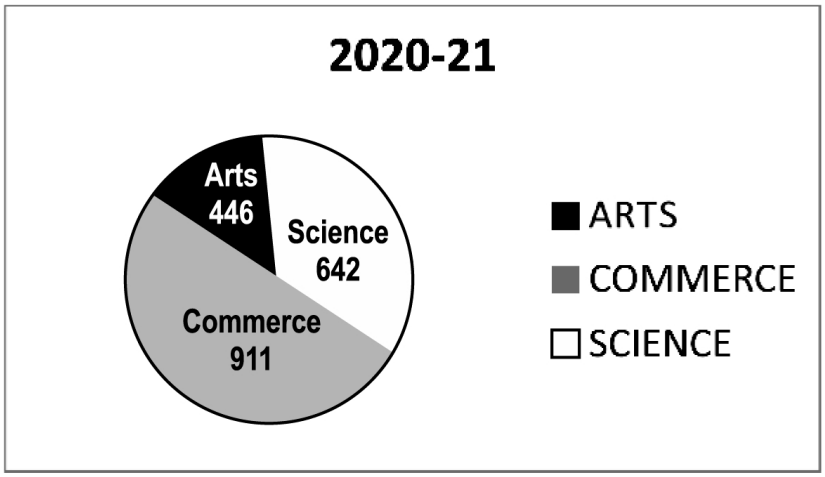

वर्ष	कुल संख्या	कला	वाणिज्य	विज्ञान
2018—19	1571	287	738	546
2019—20	1604	323	755	526
2020—21	1999	446	911	642

Examination Results 2019-20

(a) Examination results for [previous academic year] (undergraduate)											
		SC		ST		Other Reserved Categories		General		Total	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1st year	Appeared	95	41	29	11	130	46	113	92	367	190
	1st division	85	40	27	11	121	44	109	92	342	187
	2nd Division	05	01	02	-	04	02	04	-	15	03
	3rd Division (WH)	05	-	-	-	05	-	-	-	10	-
2nd year	Appeared	60	34	33	11	109	63	66	64	268	172
	1st division	45	25	25	06	83	55	45	58	198	144
	2nd Division	14	09	08	05	25	08	21	06	68	28
	3rd Division	01	-	-	-	01	-	-	-	02	-
3rd year	Appeared	59	34	31	09	98	52	73	54	261	149
	1st division	35	21	19	08	60	40	52	41	167	110
	2nd Division	22	11	12	01	37	11	21	13	92	36
	3rd Division	02	01			01	01			02	03

(a) Examination results for [previous academic year] (postgraduate)											
		SC		ST		Other Reserved Categories		General		Total	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1st year	Appeared	16	21	08	09	22	26	16	25	62	81
	1st division	12	19	06	07	13	24	12	21	43	81
	2nd Division	-	01	-	-	04	01	01	03	05	05
	3rd Division (WH)	04	01	02	02	05	01	03	01	14	05
2nd year	Appeared	12	12	06	04	18	17	11	14	47	49
	1st division	10	11	02	02	13	13	07	13	32	39
	2nd Division	01	01	04	01	03	02	02	01	09	05
	3rd Division (WH)	01	-	-	01	02	02	02	-	06	03

Examination Results 2020-21

(a) Examination results for [previous academic year] (undergraduate)											
		SC		ST		Other Reserved Categories		General		Total	
		M	F	M	F	M	F	M	F	M	F
1st year	Appeared	85	32	37	08	132	58	122	116	376	214
	1st division	79	30	32	08	124	56	115	112	350	206
	2nd Division	06	02	04	-	08	02	07	04	025	008
	3rd Division (WH)	-	-	01	-	-	-	-	-	01	-
2nd year	Appeared	85	40	27	12	122	44	114	91	348	187
	1st division	81	39	25	12	116	43	112	91	334	185
	2nd Division	04	01	02	-	06	01	02	00	014	002
	3rd Division	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3rd year	Appeared	67	30	36	11	112	73	69	62	284	177
	1st division	55	28	27	08	98	71	58	61	238	168
	2nd Division	12	02	09	03	14	02	11	01	46	009
	3rd Division	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

(a) Examination results for [previous academic year] (postgraduate)											
		SC		ST		Other Reserved Categories		General		Total	
1st year	Appeared	18	21	09	09	25	45	21	39	74	114
	1st division	17	19	08	08	25	41	20	39	71	107
	2nd Division	01	02	01	01	00	04	01	-	03	007
	3rd Division (WH)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
2nd year	Appeared	14	19	08	09	20	23	16	23	58	74
	1st division	14	18	08	09	19	23	16	21	57	71
	2nd Division	-	01	-	-	01	00	00	02	01	03
	3rd Division (WH)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

छात्र हित में उच्च शिक्षा विभाग, जनभागीदारी एवं विश्व बैंक परियोजना द्वारा किए गए कार्य

✠ **सत्र 2020–21 में शासन से प्राप्त आवंटन–**

क्रं.	कार्य विवरण	व्यय राशि
1	आदर्श प्रयोगशाला उन्नयन हेतु छात्र हित में प्राणिशास्त्र एवं रसायन शास्त्र प्रयोगशालाओं की सामग्री क्रय	17,22,167/–
2	खेलकूद प्रोत्साहन योजना हेतु योजना अन्तर्गत क्रीड़ा विभाग में लगने वाली सामग्री क्रय	1,24,997/–

✠ **छात्र हित में जनभागीदारी मद से सत्र 2020–21 में कार्य –**

क्रं.	कार्य विवरण	व्यय राशि
1	कम्प्यूटर प्रिंटर कय 05 विभागों हेतु	57,500/–
2	विज्ञान प्रयोगशाला के छत के ऊपर टीन शेड का निर्माण	4,68,837/–
3	कोविड 19 से बचाव हेतु आटोमैटिक सेनिटाइजर मशीन, फॉग मशीन, हैंड सेनिटाइजर मशीन क्रय	89,909/–
4	स्मार्ट क्लास हेतु उपकरण क्रय	2,99,720/–
5	भौतिक विभाग की छत पर उपकरणों की सुरक्षा हेतु टीन शेड का निर्माण कार्य	4,97,016/–
6	जूलॉजी विभाग की छत पर उपकरणों की सुरक्षा हेतु टीन शेड का निर्माण कार्य	5,26,008/–

✠ **जनभागीदारी मद से सत्र 2021–22 में कार्य–**

क्रं.	कार्य विवरण	व्यय राशि
1	छात्रहित में विद्यार्थी के लिये पुस्तकें कय	4,10,059/–
2	छात्रहित में पोर्टेबल वाटर प्यूरिफायर कय	85,199/–
3	पानी सप्लाई हेतु वाटर टेंक शिफ्टिंग एवं फिटिंग	45,500/–
4	महिला और पुरूष प्रसाधन का पुनर्निर्माण	1,53,000/–
5	महाविद्यालय के मुख्यद्वार पर टीन शेड का निमार्ण कार्य	4,70,960 /–

✠ विश्व बैंक परियोजना (रूसा) से प्राप्त उपकरण

क्र.	सामग्री का नाम	संख्या	राशि
1.	Pathological Monocular Microscope GE-40	25	99750/-
2.	Water Distillation Unit Single Steel Capacity 4.0 Ltr	01	26906/-
3.	Water Distillation Unit Double Steel Capacity 4.0 Ltr	01	54203/-
4.	Variable Volume Single Channel Micropipettes	01	1652.54/-
5.	LHC 37112029 Single Channel Var Pipette 100-1000Ul (BOROSIL)	01	1701/-
6.	LHC 37112005 Single Channel Var Pipette 05-10Ul (BOROSIL)	01	1701/-
7.	Lab Stool Size - H680 MM & SH 535 mm	176	93456/-
8.	Domestic Refrigerators	02	58892/-
9.	Pathological Monocular Microscope Ge-40	25	99750/-
10.	Water Distillation Unit Single Steel Capacity 4.0 Ltr	01	26906/-
11.	Water Distillation Unit Double Steel Capacity 4.0 Ltr	01	54203/-
12.	Variable Volume Single Channel Micropipettes	01	1652.54/-
13.	LHC 37112029 Single Channel Var Pipette 100-1000 Ul (BOROSIL)	01	1710/-
14.	LHC 37112005 Single Channel Var Pipette 05-10Ul (BOROSIL)	01	1701/-
15.	Laboratory Operators (Plant)	02	53784/-
16.	Laboratory Operators (Plant)	01	11476/-
17.	Laboratory Operators (Plant)	02	34409/-

✠ विश्व बैंक परियोजना (रूसा) से प्राप्त फर्नीचर

क्र.	सामग्री का नाम	संख्या	राशि
1.	Visitor Chair With Armrest Ty-IIMF-151 GST /468/2020-21	38	125552/-
2.	Executive/Office Table CMF-82	93	471882/-
3.	Steel Almirah Major DX 31 ASMF 112801	01	8496/-
4.	Office Table SWF-36	01	34668.40/-
5.	Student Desk Type II,DX 69A	80	379016/-
6.	Multipurpose Expandable Rack DY-52A	10	76464/-
7.	Visitor Chair MF-145	05	41300/-
8.	Visitor Chair MF-145	35	289100/-
9.	Periodical Stand DX -3013	05	38350/-
10.	Podium DX-56A	07	61950/-
11.	Stainless Steel Glass Door Cabinet DX-35A	07	67980/-
12.	Premium Chair H.B.TY-IMF-136 1. Sofa set type II three seater MF162 2. sofa set single seater MF-162 3. visitors bench LMF-169	01 01 02 03	7000/- 19500/- 14000/- 15600/-
13.	Compactor smf 110601	03	291112/-
14.	Lab Stool Size-H680 MM&SH 535MM	176	93456/-
15.	Domestic Refrigerators	02	58892/-
16.	Computer running table	46	189980/-

प्रतिवेदन

1. स्ववित्तीय पाठ्यक्रम

इस महाविद्यालय में म.प्र. शासन उच्च शिक्षा से अनुमति प्राप्त और बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से सम्बद्ध रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम स्ववित्तीय आधार पर जनभागीदारी के तत्वावधान में सन् 2003–04 से संचालित है, जिनमें अध्ययन कर छात्र–छात्राओं ने अपनी योग्यता के अनुरूप प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों में न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी कॅरियर बनाया है।

✠ पी.जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट

यह एक वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम है जो शैक्षणिक सत्र 2003–04 से संचालित है जिसमें किसी भी विषय का स्नातक नियमित प्रवेश की पात्रता रखता है। म.प्र. में यह एक मात्र शासकीय महाविद्यालय है जहां यह पाठ्यक्रम संचालित है, इसमें अध्ययन करने के पश्चात् विद्यार्थी टूरिज्म और होटल दोनों क्षेत्रों में अपना कॅरियर बना सकता है। इस डिप्लोमा के पाठ्यक्रम में भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक परिचय, पर्यटन के सिद्धांत और व्यवहार, यातायात और यात्रा एजेंसी, होटल मैनेजमेंट और केटरिंग, टूरिज्म मैनेजमेंट और कम्प्यूटर एप्लीकेशन प्रश्नपत्रों का अध्यापन कराया जाता है। व्यावहारिक ज्ञान के लिए शैक्षिणक भ्रमण और परियोजना कार्य संबंधी प्रश्न पत्र भी है।

इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् वैतनिक और स्वरोजगार दोनों क्षेत्रो में विद्यार्थी अपना भविष्य बना सकते हैं, जिसके अंतर्गत केन्द्र / प्रादेशिक पर्यटन विभाग, रेलवे का आई.आर.सी.टी.सी. (IRCTC), विभिन्न ट्रेवल एजेंसियों, एयरलाइंस और होटल एवं अन्य आवास संस्थानों में सेवाएं प्रदान करने का अवसर मिलता है गत सत्र में दो छात्राओं का अंतर्राष्ट्रीय होटल श्रृंखला की भोपाल इकाई लेक फ्रंट ताज में तथा एक छात्रा का आई. आई. एस. ई. आर. (IISER) में चयन हुआ विगत सत्रों के छात्र–छात्राएं भी देश–विदेश में अपना कॅरियर बना रहे हैं।

पाठ्यक्रम समन्वयक – डॉ. संजय जैन

✠ बी.कॉम. ट्रेवल टूरिज्म

यह तीन वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम इस महाविद्यालय में सन् 2009–10 से संचालित है जिसमें 12वीं वाणिज्य या विज्ञान से उत्तीर्ण विद्यार्थी प्रवेश की पात्रता रखता है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के अंतर्गत इस विषय का अध्यापन 'चयनित' (ELECTIVE) विषय के रूप में कराया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त विद्यार्थी को मेजर' और 'माइनर विषय के वही प्रश्न पत्रों का अध्ययन करना होता है, जो बी.कॉम. सामान्य के विद्यार्थी करते हैं।

यह पाठ्यकम 12वीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पर्यटन एवं यात्रा क्षेत्र में रोजगार के अवसरों के साथ उच्च शिक्षा के अवसर भी प्रदान करता है–बी.कॉम. ट्रेवल टूरिज़्म उत्तीर्ण कर एम.बी.ए.(टूरिज्म), टूरिस्ट गाइड प्रशिक्षण, एम.टी.एम.एवं एम.टी.ए. में प्रवेश ले सकता है। केन्द्र एवं राज्य सरकार के पर्यटन एवं यात्रा विभाग, ट्रेवल एजेंसियों, पेइंग गेस्ट, मोबाइल फूड वेन, इवेंट मैनेजमेंट, मौलिक लेखन, पर्यटन, पत्रकारिता एवं एंकरिंग आदि क्षेत्रों में कॅरियर बना सकता है। हस्त शिल्प विक्रय, सांस्कृतिक आयोजन, मार्ग सुविधाएं, स्टार्टअप योजना हुनर से रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता कर स्वरोजगार प्राप्त कर सकता है और कई लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर सकता है।

पाठ्यक्रम समन्वयक – डॉ. संजय जैन

✠ बी.कॉम. कम्प्यूटर, एप्लीकेशन

स्ववित्तीय योजना के अन्तर्गत जनभागीदारी के माध्यम से संचालित रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन, महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2006–2007 से निरन्तर संचालित है। वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2021–22 में बी. कॉम. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में क्रमशः 60,44,31 विद्यार्थियों की संख्या 135 है।

पाठ्यक्रम से संबंधित प्रयोगशाला में विद्यार्थियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु 20 कम्प्यूटर उपलब्ध हैं। वर्तमान सत्र में कम्प्यूटरों की संख्या बढ़ाकर 30 किये जाने की योजना संचालित है। अध्यापन कार्य जनभागीदारी के माध्यम से अतिथि विद्वानों के द्वारा किया जाता है। पाठ्यक्रम में प्रवेशित विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम लगभग शत–प्रतिशत रहा है।

नियमित अध्यापन के साथ–साथ प्रवेशित विद्यार्थियों एवं महाविद्यालयीन स्टॉफ में कम्प्यूटर स्किल के अधिकाधिक प्रयोग किये जाने के उद्देश्य से विभाग द्वारा समय–समय पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे– Resume] Designing and Teaching Interview] Account of using Tally] E&Learning a useful tool] Digital India ETC- विषय पर व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक प्रशिक्षण भी दिया गया हैं।

पाठ्यक्रम समन्वयक – डॉ. ए. के. महागाये

✠ बी.एससी.–क्लिनिकल न्यूट्रिशन एंडडाइटेटिक्स डिपार्टमेंट

क्लिनिकल न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स अर्थात् नैदानिक पोषण एवं आहार चिकित्सा विषय महाविद्यालय में सत्र 2002 – 2003 से प्रारंभ है। मध्य प्रदेश में यह महाविद्यालय ऐसा महाविद्यालय है जहां पर छात्राओं के साथ ही साथ छात्रों को भी यह विषय अध्ययन हेतु उपलब्ध है। यह स्ववित्तीय रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम है।

इस विषय के अध्ययन के पश्चात् छात्र एवं छात्राएं स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में पोषण विशेषज्ञ (न्यूट्रीशनिस्ट) एवं आहार चिकित्सक (डाइटिशियन) के रूप में कार्य कर सकते हैं। विभिन्न अस्पतालों, क्लिनिक्स, हेल्थ क्लब्स, स्पोर्ट्स क्लब्स में इन्हें रोजगार उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य विभाग, खाद्य विभाग, कृषि विभाग, खाद्य संरक्षण विभाग, खाद्य प्रसंस्करण विभाग,खेलकूद विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग ऐसे कई सरकारी विभाग हैं जहां आहार एवं पोषण विशेषज्ञ के लिए पद उपलब्ध है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जैसे डब्ल्यूएच, यूनिसेफ एफएसएसएआई, एफएओ, एगमार्क में क्लिनिकल न्यूट्रिशन के छात्र छात्राओं को रोजगार प्राप्त होता है। इसके साथ ही साथ विभिन्न प्रकार की रक्षा सेवाओं जैसे आर्मी, नेवी एवं एयर फोर्स के हॉस्पिटल्स में भी आहार विशेषज्ञ के पद होते हैं।

गत वर्ष भी न्यूट्रिशन विषय में लगभग 50 छात्र छात्राओं ने प्रवेश लिया था तथा लगभग 30 छात्र छात्रा बीएससी अंतिम वर्ष में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हुए तथा वे विभिन्न महाविद्यालयों में एम.एस.सी. न्यूट्रीशन में अध्ययनरत हैं एवं महाविद्यालय के अनेक छात्र एवं छात्राएं, स्वास्थ्य एवं पोषण के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

पाठ्यक्रम समन्वयक–डॉ. मीता बादल

✠ बी.एससी. – बायोटेक्नोलॉजी

बायोटेक्नोलॉजी अर्थात् जैव प्रौद्योगिकी विषय महाविद्यालय में सत्र 2007–2008 से प्रारम्भ है। यह एक स्ववित्तीय रोजगारोन्मुखी पाठयक्रम है। प्रत्येक वर्ष 60 से भी ज्यादा विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का चयन करते हैं और अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होकर विभिन स्थानों में कार्यरत हैं। विभाग द्वारा विद्यार्थियों को विभिन संस्थानों जैसे MPCST, VINDHYA HERBAL, SAMBHAVNA TRUST, FOOD PROCESSING INDUSTRY आदि में विद्यार्थी को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है।

बायोटेक्नोलॉजी विज्ञान की ऐसी शाखा है जिसमें बायोलॉजी और टेक्नोलॉजी शामिल होती है। इस तकनीक में Living Organism और उनके प्रोडक्ट का इस्तेमाल करके नए और बेहतर प्रोडक्ट बनाये जाते है ताकि Plant और Animal Breed को उन्नत किया जा सके। मेडिकल फील्ड में बायोटेक्नोलॉजी यानी जैव प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल नई दवाई की खोज करने और जेनेटिक्स टेस्ट करने में किया जाता है।

बायोटेक्नोलॉजी में कोई भी कोर्स करने से पहले यह बहुत जरूरी है कि विद्यार्थी की रूचि विज्ञान विषय में हो जिससे रिसर्च, एक्सपेरिमेंट और डिस्कवरी करके इस फील्ड में विद्यार्थी एक सफल कॅरियर बना सकते हैं।

बायोटेक्नोलॉजी में एजुकेशन पूरी करने के बाद विद्यार्थी बहुत से फील्ड में अपने पसंद के कॅरियर चुन सकते हैं जैसे Medical Writing] Help Care Centers, Animal Husbandry Genetics Engineering, Research Laboratory, Food Manufacturing Industry, Agriculture Sector, IT और Pharmaceutical Companies- विद्यार्थी बायोटेक्नोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट करते हैं तो उनको मिलने वाले जॉब ऑप्शन काफी बढ़ जाते है' जैसे कि micro biologist, bacteriologist, genetics, immunologist, molecular biologist, bio analytical chemist, medical bio chemist, pharmacologist IT Assistant Professor.

पॉपुलरफर्म जहाँ बायोटेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों की आवश्यकता है –

- Biocon Limited Indian Immunologicals Limited (IIL)
- Wockhardt trans Asia biomedicals
- Piramal group
- Serum Institute of India Limited

पाठ्यक्रम समन्वयक– डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव

✠ हिन्दी विभाग

महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में तीन प्राध्यापक कार्यरत हैं । वाणिज्य, कला एवं विज्ञान तीनों संकाय में हिन्दी भाषा का और कला संकाय में स्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्यापन किया जाता है। विभाग द्वारा समय–समय पर साहित्यकारों की जयंती पर साहित्यिक आयोजन किए जाते हैं। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' और 10 जनवरी को 'विश्व हिन्दी दिवस' विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ मनाया जाता है। विभाग द्वारा कोविड–19 के दौरान विद्यार्थियों को ऑनलाइन अध्यापन कराते हुए आभासी रूप में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई गयी । विभाग में विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहा।

विभाग के तीनों प्राध्यापक लेखन और शोध कार्य से भी जुड़े हुए हैं। विभागाध्यक्ष डॉ, अंशुबाला मिश्र ने आठ, पुनीता जैन ने आठ तथा डॉ.सुषमा जादौन ने चार राष्ट्रीय स्तर के वेबिनार और संगोष्ठियों में सहभागिता की। डॉ. अंशुबाला मिश्र की तीन पुस्तकें, पुनीता जैन की दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। विभाग के प्राध्यापकों के शोध आलेख और कविताएँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। डॉ. अंशुबाला मिश्र मध्यप्रदेश शासन द्वारा राज्य शिखर सम्मान 2019–20 की चयन समिति में सदस्य के रूप में चयनित हुईं। साहित्यिक उपलब्धियों के लिए डॉ. पुनीता जैन को 25 / 12 / 2020 को पल्लव काव्य मंच', रामपुर ,उत्तर प्रदेश द्वारा 'डॉ. सुमन राजे राष्ट्रीय सम्मान' से सम्मानित किया गया । बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के तीन शोधार्थियों को डॉ. सुषमा जादौन के निर्देशन में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त हुई है, भारतीय साहित्य सृजन संस्थान शिवपुरी, म.प्र.द्वारा डॉ.सुषमा जादौन को कविगोष्ठी में उत्कृष्ट रचना प्रस्तुत करने पर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। विभाग के तीनों प्राध्यापक कमशः केन्द्रीय अध्ययन मंडल एवं उत्कृष्टता संस्थान भोपाल के अध्ययन मंडल की सदस्य रहे तथा पाठ्यक्रम निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई।

प्राचार्य के कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से 19 फरवरी 2021 को विभाग द्वारा फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें दो सत्रों के अन्तर्गत सारगर्भित, प्रभावी और समसामयिक विषय पर वर्चुअल व्याख्यान दिए गए । इस कार्यक्रम में डॉ. माधवीलता दुबे, प्राध्यापक, समाजशास्त्र ने 'पर्यावरण और सतत विकास' और डॉ. सुधीर रंजन सिंह, प्राध्यापक, हिन्दी ने 'आधुनिक हिन्दी का विकास और भारतीयता' विषय पर व्याख्यान दिया ।इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी संख्या में प्राध्यापकों ने सहभागिता की। हिन्दी विभाग साहित्यिक, अकादमिक और बौद्धिक कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय सहभागिता का निर्वहन करता रहा है।

विभागाध्यक्ष– अंशुबाला मिश्रा

English Department

In English department classes are conducted only on graduate level- Due to covid pandemic online classes were conducted during the session 2019&20] professors participated in webinars-In 2020&21 the department organised a webinar on faculty development program- Prof- Vikas Jaolkar delivered a lecture on 'Enhancing soft skills' and Dr Nishant Jaolkar delivered a lecture on "Covid&19 management and impact on society"- The department solves the problems of the students- Following all covid protocols the department has organised many academic activities like quiz programme] oral presentations] tests] group discussions etc online.

विभागाध्यक्ष– डॉ. इलारानी श्रीवास्तव

✠ समाजशास्त्र विभाग

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यायल भेल, भोपाल में स्थापना वर्ष से ही समाजशास्त्र विषय संचालित हैं। समाजशास्त्र विभाग द्वारा समय–समय पर सामाजिक समस्याओं से संबधित गतिविधियां कराकर छात्रों को जागरूक किया जाता रहा है। दिनांक 12–10–2021 को केन्द्रीय सशस्त्र सीमा बल के श्री पराग चतुर्वेदी द्वारा 'SAY NO TO DRUGS' विषय पर छात्रों को अपने ज्ञान और अनुभव से लाभान्वित कराया गया।

दिनांक 29.10.2021 को "NUGABEST NATURAL THERAPY CENTRE" के सौजन्य से सुश्री उषा एवं सुबोध द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थी एवम् समस्त महाविद्यालय स्टॉफ ने अपनी सहभगिता सुनिश्चित की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह दर्शाता था कि सेहत ही नेमत है, जिसके लिये अल्प समय स्वयं के लिए निकाल कर खुद को अंग्रेजी दवाइयों से मुक्त रखने का प्रयास कर सकते है।

समाजशास्त्र विभाग द्वारा 1 अप्रैल, 2021 को 'नशा मुक्ति और युवा जागरूकता' पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें ठाकुर रणजीत सिंह महाविद्यालय रीवा के प्रो. डॉ. महेश शुक्ला जी द्वारा समाज की ज्वलन्त समस्या नशा मुक्ति पर अपने अमूल्य विचारों से विद्यार्थियों सहित महाविद्यालय स्टाफ को जागरूक कराया गया। इस वेबिनार में प्राचार्य डॉ. मथुरा प्रसाद द्वारा भी प्रभावी व्याख्यान दिया गया। समाजशास्त्र विभाग में डॉ संध्या सक्सेना HOD डॉ. अर्चना शर्मा NCC प्रभारी डॉ. गीता चौहान NSS प्रभारी हैं। समय समय पर समाजशास्त्र के युवा प्राध्यापकों के द्वारा विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

विभागाध्यक्ष – डॉ संध्या सक्सेना

✠ राजनीति विज्ञान विभाग

राजनीति विज्ञान विभाग में दो प्राध्यापक कार्यरत है। यह विभाग बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय का पीएच.डी. का भी अध्ययन केन्द्र है। शासकीय स्नातकोत्तर भेल महाविद्यालय के राजनीतिविज्ञान विभाग द्वारा ई–वार्षिक न्यूज लेटर प्रकाशित करने के अभिनव प्रयास का यह तृतीय वर्ष है। इस न्यूज लेटर के माध्यम से विभाग की समस्त शैक्षणिक, शैक्षणेत्तर, रचनात्मक गतिविधियाँ एवं उपलब्धियों को दर्शाने का लघु प्रयास किया जाता है।

अगस्त माह में प्रवेश उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. गरिमा जाउलकर के निर्देशन में विद्यार्थियों को उन्मुखी कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय एवं शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं से अवगत कराया गया। 20 अगस्त को 'सद्भावना दिवस' के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया एवं राज्य स्तरीय कार्यक्रम के सीधे प्रसारण से विद्यार्थी को अवगत कराया गया। 16 सितम्बर 2019 को विधानसभा सभागार में भेल महाविद्यालय की युवा संसद के विद्यार्थियों को प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड, ट्रॉफी एवं 15 हजार का चेक देकर पुरस्कृत किया गया। महाविद्यालय के पाँच विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अभिनय के लिए विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। अन्य महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त कर युवा संसद के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

24 सितम्बर को राजनीतिवज्ञान विभाग द्वारा युवा संकल्प वर्ष के अंतर्गत 'नये भारत के निर्माता भारत रत्न श्री राजीव गांधी विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतीक मांडवे एम.ए. राजनीति विज्ञन प्रथम, अभिषेक सोनी बी.ए.–द्वितीय वर्ष द्वितीय एवं रिया सिंह बी.ए.–सेकेण्ड ईयर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 1 अक्टूबर को युवा संकल्प वर्ष के अंतर्गत पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें पूनम कोची प्रथम स्थान, प्रतीक मर्सकोले द्वितीय एवं तुषारिका सूद तृतीय स्थान पर रहीं। 2 अक्टूबर को म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर गरिमामय कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 'सत्य के मेरे प्रयोग' 'हिन्द स्वराज' पुस्तक का सामूहिक वाचन किया गया एवं उनके प्रिय भजनों का गायन भी किया गया । 23 अक्टूबर को माननीय केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार महाविद्यालय के राजनीतिविज्ञान विभाग द्वारा 'ईमानदारी एक जीवन शैली' विषय पर भाषण प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

11 नवम्बर को युवा संकल्प वर्ष के अंतर्गत महाविद्यालय में 'राजीव गांधी का सपना आई.टी. कम्प्यूटर में अग्रणी हो देश अपना' पर परिचर्चा आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में जिला स्तर पर राजनीति विज्ञान विभाग की छात्रा कु. वंदना बघेल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दिसम्बर माह में मानव अधिकार दिवस, विजय दिवस, महिला स्वास्थ्य संरक्षण एवं अधिकार पर आयोजित कार्यक्रम, राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अन्तर्गत 'वाद–विवाद' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पक्ष विपक्ष में विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

जनवरी 2020 में विभाग द्वारा 'महात्मा गांधी' के जीवन पर केन्द्रित प्रश्नमंच प्रतियोगिता, रावी संकल्प दिवस का आयोजन किया गया। 2020–21 में आभासी कार्यशाला, राष्ट्रीय वर्कशाप का आयोजन किया गया इसके साथ ही भारत चीन संबंध' पर अकादमिक व्याख्यान,मार्च 2021 दाण्डी मार्च पर विचार गोष्ठी की गई। 'आजादी का अमृत महोत्सव' एवं स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ पर विभाग द्वारा चित्रकला,स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी, साइकिल रैली एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विभागाध्यक्ष – डॉ. गरिमा जाउलकर

✠ रसायनशास्त्र विभाग

रसायन शास्त्र में स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम संचालित है, जिसमें गणित, बायो, बायोटेक एवं सी.एन.डी विषयों के लगभग 500 विद्यार्थी पंजीकृत है। विभाग में सुव्यवस्थित प्रयोगशाला है, जिसमें पर्याप्त संख्या में रसायन एवं उपकरण है। विभाग में दो वरिष्ठ प्राध्यापक, एक प्रयोगशाला तकनीशियन कार्यरत है। विद्यार्थियों को विषय के अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ उच्च अध्ययन हेतु अच्छे संस्थानों में प्रवेश के लिये प्रेरित किया जाता है तथा रोजगार हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिये मार्गदर्शन दिया जाता है।

प्राध्यापक, डॉ. नीलम चोपड़ा के मार्गदर्शन में एक शोधार्थी (मीनाक्षी सावनकर) को जनवरी 2021 में बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। विभाग के प्राध्यापकों द्वारा इस वर्ष (1 अक्टूबर से) ऑनलाइन सैद्धांतिक कक्षाओं का संचालन सुव्यवस्थित तरीके से किया गया, जिससे Covid-19 की महामारी में भी विद्यार्थियों का घर में सुरक्षित रहते हुये ही नियमित अध्ययन कराया गया। ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा विद्यार्थियों को Presentation, Group Discussion एवं वेबिनार भी करवाये गये। जनवरी माह से Offline/Online नियमित कक्षाएँ (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक समय सारिणी अनुसार) ली गई।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा B.Sc. अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को 'रोजगार के विकल्प एवं अवसर पर एक वेबिनार का आयोजन कर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। रसायन शास्त्र के आधारभूत सिद्धांत विषय पर डॉ. सरिता श्रीवास्तव (प्राध्यापक) द्वारा एक अतिथि व्याख्यान करवाया गया, जो विद्यार्थियों के लिये बहुत लाभकारी रहा।

विभागाध्यक्ष –डॉ. अंजना अग्रवाल

✠ भौतिकशास्त्र विभाग

महाविद्यालय के भौतिक शास्त्र विभाग में स्नातक स्तर की कक्षाएं संचालित हो रही हैं। बी.एससी.प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में लगभग 256 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विभाग में कार्यरत प्राध्यापक डॉक्टर उमेश कुमार साकल्ले एवं सहायक प्राध्यापक श्रीमती प्रीति जौहरी के द्वारा पाठ्यक्रम के साथ साथ विषय से संबंधित शोध कार्यों की संक्षिप्त जानकारी भी समय–समय पर विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है। विभाग के डॉ. उमेश साकल्ले, हाई प्रेशर कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स पर शोध कार्य में संलग्न है। यूजीसी से मान्य विभिन्न अंतरराष्ट्रीय शोध जर्नल में इनके 2 5 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. उमेश साकल्ले विश्व बैंक परियोजना के नोडल अधिकारी के रूप में महाविद्यालय के विकास में अपना योगदान दे रहे

हैं। नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत भौतिक शास्त्र विषय के पाठ्यक्रम निर्माण हेतु केंद्रीय अध्ययन मंडल के सदस्य के बतौर भी कार्यरत हैं। विभाग की सहायक प्राध्यापक श्रीमती प्रीति जौहरी महाविद्यालय में प्रवेश कार्य की कोर समिति में अपना योगदान दे रही है। साथ ही उनके मार्गदर्शन में महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब संचालित है। विभाग में सुव्यवस्थित प्रयोगशाला है जिसमें पर्याप्त संख्या में उपकरण हैं। विभाग में कार्यरत एक प्रयोगशाला तकनीशियन एवं एक प्रयोगशाला परिचारक की सहायता से शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थी प्रायोगिक कार्य संपन्न कर विषय से संबंधित जिज्ञासा शांत करते हैं। विद्यार्थियों को अध्ययन अध्यापन के साथ–साथ महाविद्यालय में संपन्न होने वाली शैक्षणेत्तर गतिविधियों में सहभागिता हेतु भी प्रोत्साहित किया जाता है एवं समय–समय पर उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया जाता है।

विभागाध्यक्ष– डॉ.उमेश कुमार साकल्ले

✠ वनस्पतिशास्त्र विभाग

वनस्पतिशास्त्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम संचालित है, जिसमें स्नातक स्तर पर लगभग 300 विद्यार्थी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 100 विद्यार्थी पंजीकृत है। विभाग में सुव्यवस्थित एवं आधुनिक प्रयोगशाला है। जिसमें सभी आवश्यक उपकरण पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है। विभाग में दो वरिष्ठ प्राध्यापक एक प्रयोगशाला तकनीशियन एवं एक प्रयोगशाला सहायक कार्यरत है। विद्यार्थियों को संबंधित विषय के अध्ययन अध्यापन के साथ–साथ उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान हेतु उत्कृष्ट संस्थानों में प्रवेश के लिये प्रेरित किया जाता है एवं विभिन्न उत्कृष्ट संस्थानों का भ्रमण भी कराया जाता है ताकि विद्यार्थी विषय को गहराई से एवं प्रेक्टिकल रूप से समझ कर अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर सकें स्वरोजगार हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिये मार्गदर्शन भी दिया जाता है।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा इस वर्ष (1 अक्टूबर से) ऑनलाइन सैद्धांतिक कक्षाओं का संचालन सुव्यवस्थित तरीके से किया गया। जिससे Covid-19 की महामारी में भी विद्यार्थियों का घर में सुरक्षित रहते हुये ही नियमित अध्ययन कराया गया। ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा विद्यार्थियों को Presentation, Group Discussion एवं वेबिनार भी करवाये गये। जनवरी माह से Offline/Online नियमित कक्षाएँ (सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक समय सारणी अनुसार) ली गई। विभाग के प्राध्यापकों द्वारा B.Sc. एवं M.Sc. अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को रोजगार के विकल्प एवं अवसर पर एक वेबिनार का आयोजन कर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। 'पादप प्रकाश संश्लेषण विषय पर डॉ.सुगंधा सिंह (प्राध्यापक) द्वारा एक अतिथि व्याख्यान करवाया गया, जो विद्यार्थियों के लिये बहुत लाभकारी रहा।

विभागाध्यक्ष – डॉ. अनुराधा दुबे

✠ अर्थशास्त्र

महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाएं संचालित की जाती हैं। विभाग में चार प्राध्यापक कार्यरत हैं। विभाग के प्राध्यापकों के द्वारा सत्र 2019–20 में Covid महामारी के दौरान Online कक्षाएं संचालित की गई,साथ ही प्राध्यापकों द्वारा Webinar में सहभागिता की गई।

सत्र 2020–21 में विभाग द्वारा Faculty Development Program का आयोजन किया गया। इस अवसर पर Dr. Anupama Rawat द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों के प्राध्यापकों ने सहभागिता की। Covid नियमों का पालन करते हुए Virtual Meet की गई। इस अवसर पर प्राचार्य महोदय ने प्रभावशाली वक्तव्य दिया। विगत वर्षों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम रहा। विभाग के छात्रों ने इस महामारी के दौरान मानसिक रूप से सुदृढ़ता दर्शाई। Google meet के माध्यम से विभाग के प्राध्यापकों ने छात्रों की समस्याओं का निराकरण किया, साथ ही छात्रों ने विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई।

विभागाध्यक्ष – डॉ. सीमा श्रीवास्तव

✠ प्राणिविज्ञान विभाग

B.Sc. Bio Group - Zoology Botany Chemistry बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल में प्राणिविज्ञान विभाग में स्नातक स्तर में प्राणिविज्ञान विषय के साथ निम्नलिखित तीन समूह में विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त करते है–

1. B.Sc. Bio Group - Zoology Botany Chemistry
2. B.Sc. Biotechnology Group - Zoology, Biotechnology, Chemistry
3. B.Sc. CND Group - Zoology Clinical Nutrition & Dietetics, Chemistry

उपर्युक्त कक्षाओं में सत्र 2019–20 में कुल 224 एवं सत्र 2020–21 में विद्यार्थी 283 अध्ययनरत है। सत्र 2019–20 एवं 2020–21 में प्राणिविज्ञान विषय का परीक्षा परिणाम लगभग शत प्रतिशत रहा है। विभाग में सुव्यवस्थित प्रयोगशाला है जिसमें पर्याप्त संख्या में उपकरण उपलब्ध है, सत्र 2020–21 में शासन की 'प्रयोगशाला उन्नयन' योजना के अन्तर्गत विषय से संबंधित उन्नत स्तर के उपकरण विभाग को उपलब्ध हुए है। विभाग में दो वरिष्ठ प्राध्यापक एक प्रयोगशाला तकनीशियन एवं एक प्रयोगशाला परिचारक कार्यरत है।

विभाग की प्राध्यापक डॉ.चारूलता राठौड़ द्वारा जनवरी, 2020 में Bentham Science में शोध पेपर प्रकाशित किया गया एवं प्राध्यापक डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में एक शोधार्थी को बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त हुई।

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा सत्र 2020–21 (01 अक्टूबर 2020) से आनलाइन सैद्धांतिक कक्षाओं का संचालन सुव्यवस्थित तरीके से किया गया, जिससे कोविड–19 की महामारी में भी विद्यार्थियों का घर में सुरक्षित रहते हुए ही नियमित अध्ययन कराया गया। ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा विद्यार्थियों को Presentation, Group Discussion एवं वेबिनार भी करवाये गये। जनवरी माह 2021 से ऑफलाइन/ऑनलाइन नियमित कक्षाएं (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक समय सारणी अनुसार) संचालित की गयी।

प्राणिविज्ञान विषय के विद्यार्थी शैक्षणिक एवं शैक्षणैत्तर गतिविधियों जैसे– एन.एस.एस., एन.सी.,सी. सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं विभिन्न खेलकूद विधाओं में सक्रियता से सहभागिता करते हैं। प्राणिविज्ञान विषय के अंतर्गत छात्र एवं छात्राओं को सतत गुणवत्ता विस्तार के अन्तर्गत उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी निर्देश के अनुरूप सतत मूल्याकंन तथा कार्यस्थल प्रशिक्षण आदि में सहभागिता कराई जाती है।

विभाग द्वारा विद्यार्थियों को विषय के अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ उच्च अध्ययन हेतु अच्छे संस्थानों में प्रवेश के लिए प्रेरित किया जाता है तथा रोजगार हेतु विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए मार्ग दर्शन दिया जाता है। इस तरह महाविद्यालय में प्राणिविज्ञान विषय के विद्यार्थियों द्वारा बहुआयामी विधाओं में सहभागिता कर अपने भविष्य का निर्माण सफलातापूर्वक किया जा रहा है।

विभागाध्यक्ष–डॉ. चारूलता राठौड़

✠ गणित विभाग

इस महावद्यालय में स्नातक स्तर पर गणित विषय की कक्षाएं महाविद्यालय की स्थापना 1984 से ही सतत रूप से ही संचालित हैं। 1998 से स्नातकोत्तर स्तर पर गणित की कक्षाएं प्रारंभ हुई।

शैक्षणिक सत्र 2020–21 में स्नातक स्तर पर गणित 232 विद्यार्थी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 55 विद्यार्थी अध्ययनरत रहे। विश्वविद्यालयीन परीक्षा 2021 में उक्त सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। यह महाविद्यालय के गौरव का विषय है। गणित विभाग द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त शैक्षणेत्तर कार्यक्रम भी आयोजित किये गये जिसमें छात्र–छात्राओं ने उत्साह से सहभागिता की। शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ में आयोजित इंडक्शन प्रोग्राम में महाविद्यालय में संचालित उच्च शिक्षा विभाग एवं अन्य विभागों की हितग्राही योजनाओं की जानकारी दी गई।

पुस्तकालय में उपलब्ध E-Library की सुविधा से भी अवगत कराया गया। 24 मार्च 2021 को गणित विभाग द्वारा "Differiential Equation And Its Application To Applied Science' विषय पर राष्ट्रीय स्तर का Webinar डॉ. दीपक सिंह (INFTTTR) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिसमें 71 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। गणित विषय विशेषज्ञों ने छात्र/छात्राओं की जिज्ञासा का समाधान किया। महाविद्यालयों में आयोजित स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ, एन.सी.सी, एन.एस.एस.,स्पोर्ट एवं साइंस क्लब की गतिविधियों में गणित के विद्यार्थियों की उत्साहजनक सहभागिता रही।

विभागाध्यक्ष– डॉ. अर्चना जैन

✠ वाणिज्य संकाय / विभाग

बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल की स्थापना 8 अगस्त 1984 में हुई थी। यह महाविद्यालय NAAC द्वारा B++ ग्रेड प्राप्त है। इस महाविद्यालय में स्थापना के प्रारंभ से ही वाणिज्य स्नातक की कक्षाएँ संचालित हैं। 1989 में वाणिज्य संकाय में स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन प्रारंभ हुआ है।

वाणिज्य संकाय में जनभागीदारी के माध्यम से तीन रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम– बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन, बी. कॉम, टूरिज्म ट्रैवल तथा पी.जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म एण्ड होटल मेनेजमेंट संचालित किये जा रहे हैं। शैक्षणिक सत्र 2021–2022 वाणिज्य संकाय में प्रथम वर्ष में कुल 580 सीटें आवंटित हैं। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गत वर्ष की तुलना मे 25ः सीटों में वृद्धि की गई है। यह प्रसन्नता का विषय है कि सभी कक्षाओं की सीटों पर विद्यार्थियों का शत्–प्रतिशत प्रवेश हो चुका है। बी.कॉम. द्वितीय वर्ष में 327, बी.कॉम. तृतीय वर्ष में 27 तथा एम.कॉम. तृतीय सेमस्टर में 56 विद्यार्थियों ने सत्र 2021–21 में प्रवेश लिया है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम 2020 एवं 2021 मे लगभग 100% रहा है। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का कई निजी एवं शासकीय संस्थानों में प्लेसमेंट हो चुका है। कई विद्यार्थी निजी व्यवसायों मे भी कार्यरत हैं। वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी एन.सी.सी., एन.एस.एस., क्रीड़ा तथा महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में प्रमुख रूप से अपनी सहभागिता करते हैं।

महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय में शोध कार्य की सुविधा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा प्रदान की गई है। वाणिज्य संकाय में अब तक लगभग 20 विद्यार्थियों को पीएच.डी.की उपाधि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जा चुकी है। वर्तमान में 06 छात्र–छात्राएँ शोध कार्य हेतु विश्वविद्यालय में पंजीकृत हैं। वाणिज्य संकाय में डॉ. आर. के. खजवानियां एवं डॉ. संजय जैन शोध–निदेशक के रूप में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में पंजीकृत हैं वाणिज्य संकाय में कुल 06 प्राध्यापक, सह–प्राध्यापक एवं सहायक प्राध्यापक नियमित फैकल्टी के रूप में कार्यरत हैं। इसमें 03 प्राध्यापक, 01 सह–प्राध्यापक तथा 02 सहायक प्राध्यापक पदस्थ हैं।

विभागाध्यक्ष – डॉ. राजेश कुमार खजवानियां

✠ पुस्तकालय प्रतिवेदन

महाविद्यालय पुस्तकालय का कुल क्षेत्रफल 40 फीट लम्बा एवं 20 फीट चौड़ा है तथा पुस्तकें रखने के लिए कुल अलमारियों की संख्या 62 है। वर्तमान में कुल 29269 पुस्तकें हैं जिन्हें शासकीय मद जनभागीदारी मद, बुक बैंक योजना तथा यू.जी.सी. मद द्वारा क्रय किया गया है। जिनमें कला, वाणिज्य तथा विज्ञान संकाय की पुस्तकें शामिल हैं। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर वाणिज्य विषय में 7581, भौतिक विज्ञान में 1420, रसायन विज्ञान में 1748, वनस्पति विज्ञान में 1907, जन्तु विज्ञान में 1533, गणित में 1961, अर्थशास्त्र में 2290, समाजशास्त्र में 2388, राजनीति विज्ञान में 2688, हिन्दी साहित्य में 1453, अंग्रेजी साहित्य में 745, आधार पाठ्यक्रम में 2725 एवं संदर्भ व अन्य विषय की 830 पुस्तकें उपलब्ध हैं। संदर्भ ग्रन्थों में इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका डिक्शनरी थिसारस आदि भी सम्मिलित हैं।

विषयवार पुस्तकों की संख्या

Up to 30/11/2021

Subject	Govt Fund	UGC Fund	Book Bank	Janbhagidaari	Total
Commerce	1205	1809	3915	652	7581
Physics	175	623	455	167	1420
Chemistry	242	593	722	191	1748
Botany	180	665	852	210	1907
Zoology	185	520	675	153	1533
Mathenatics	325	758	585	293	1961
Economics	175	649	1264	202	2290
Sciology	220	768	1170	230	2388
Political Sc.	270	669	1545	204	2688
Hindi	265	707	308	173	1453
English	130	472	74	69	745
Reference/Other	223	177	120	310	830
Foundation Course	227	662	1716	120	2725
Total	**3822**	**9072**	**13401**	**2974**	**29269**

पुस्तकालय में मंगाई जाने वाले जर्नल्स/ पत्रिकाएँ–

(1) Indian Journal of Experimental Biology
(2) Medicinal& Aromatic Plant Abstracts
(3) Indian Science Abstracts
(4) **भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका**
(5) Pramana-Journal of Physics
(6) Journal of Chemical Sciences
(7) Journal of Biosciences
(8) Resonance-Journal of Science Education
(9) Current Science

पत्रिकाएँ

1. Career 360
2. समकालीन साहित्य समाचार
3. रचना

पुस्तकालय में मंगाये जाने वाले दैनिक समाचार पत्र

(1) दैनिक भास्कर
(2) दैनिक जागरण
(3) राज एक्सप्रेस
(4) नवदुनिया
(5) पत्रिका
(5) द टाइम्स आफ इंडिया

बैठक व्यवस्था–

महाविद्यालय वाचनालय में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अलग अलग बैठकर पढ़ने की व्यवस्था है। पाठकों को अद्यतन जानकारी एवं बौद्धिक विकास के लिए पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। वाचनालय में एक साथ 10 शिक्षक एवं 25 विद्यार्थी बैठकर पढ़ सकते हैं।

पुस्तकालय आटोमेशन–

कार्यालय, आयुक्त उच्च शिक्षा विभाग के आदेशानुसार महाविद्यालय पुस्तकालय को पूर्ण रूप से 'टर्नकी' आधार पर आटोमेटिड किया गया है। वर्तमान में 28331 पुस्तकों की SOUL Software के माध्यम से पुस्तकों की डाटा एन्ट्री कर आटोमेशन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है, ताकि विद्यार्थियों एवं स्टाफ को पुस्तकालय में उपलब्ध संबंधित विषय की पुस्तकों की जानकारी शीघ्रता से प्राप्त हो सकेगी तथा पुस्तकों के लेन देन के परम्परागत तरीके को समाप्त कर कम्प्यूटर के माध्यम से पेपरलेस तरीके से पुस्तकों का लेन देन किया जा सकेगा।

ई–लाइब्रेरी सुविधा–

महाविद्यालय के सर्वसुविधा युक्त कक्ष में ई–लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें स्नातक स्तर की विभिन्न विषयों की ई–पुस्तकें उपलब्ध हैं। आईडी एवं पासवर्ड के द्वारा पुस्तक ओपन कर विद्यार्थी / शिक्षक लाभान्वित हो रहे हैं। भविष्य में विभिन्न विषयों की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की अधिक से अधिक पुस्तकों को उपलब्ध करवाने की योजना है।

हितग्राही मूलक योजना –

शासन द्वारा वर्ष 2012–13 से हितग्राही मूलक योजना का आरंभ हुआ है जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय में अध्ययनरत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को नि:शुल्क पुस्तकें एवं स्टेशनरी वितरित कर लाभान्वित किया गया। वर्षवार संख्यात्मक विवरण निम्नानुसार है–

YEAR	SC	ST	TOTAL
2012-13	102	42	144
2013-14	248	68	316
2014-15	245	70	315
2015-16	269	91	360
2016-17	337	95	432
2017-18	312	144	456
2018-19	321	149	470
2019-20	394	165	559
2020-21	381	167	548

पुस्तकालयाध्यक्ष – डॉ.पी.एन.राज

✠ शारीरिक शिक्षा एवं क्रीड़ा विभाग (2019–20)

महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा एवम् कीड़ा विभाग द्वारा सत्र 2019–2020 में महाविद्यालय स्तर, जिला संभाग एवं राज्य स्तर पर इन खेलों में भागीदारी की गयी– बास्केटबॉल, व्हालीबॉल, जूडो, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, बेसबॉल, साफ्टबॉल, एथलेटिक्स, शतरंज, खो–खो, कबड्डी, किकेट, फुटबॉल, हैण्डबॉल, तैराकी, कास कंट्री, वेटलिफिंटिग इत्यादि। साथ ही महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए उचित जिम मशीनों की भी व्यवस्था है।

महाविद्यालय के कई खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विविध खेलों में भाग लिया, जिनमें प्रमुख नाम निम्नानुसार है–

1. कार्तिकेय दुबे **(अन्तर्राष्ट्रीय कराटे),** 2. मयंक घोतरे, 3. निखिल कुशवाह, 4. राहुल बमन, 5. कुलदीप सिंह, 6. शिवम सिंह, 7. कु. रंजना पाल, 8. शिवम दुबे

क्रीड़ा अधिकारी– चन्द्रशेखर धाकड़

✠ राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

महाविद्यालय में में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों (पुरूष एवं महिला) ने सक्रिय रूप से कार्य किया। इनके द्वारा वर्ष की सभी नियमित गतिविधियाँ सुचारू रूप से सम्पन्न की गई। महाविद्यालय प्रांगण की एन.एस.एस.इकाई द्वारा समय–समय पर सफाई की जाती है। वृक्षारोपण एवं परिसर को पॉलिथिन मुक्त किया जाता है। विगत वर्ष में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष सात दिवसीय शिविर ग्राम– आदमपुर छावनी में आयोजित किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक ग्रामवासी को स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य से अवगत कराना था। यह शिविर अपने उद्देश्य की पूर्ति में अत्यधिक सफल रहा साथ ही ग्रामवासियों को स्वच्छता एवं व्यक्तिगत साफ–सफाई के बारे में जानकारी दी। गाँव को स्वच्छ बनाने में स्वयंसेवकों ने ग्रामवासियों की मदद की। शासन की योजना के तहत सभी घरों में शौचालय बनाने की जानकारी दी जिससे गाँव गन्दगी से मुक्त रहे एवं सुंदर व स्वस्थ ग्राम का विकास हो सके। इस वर्ष Covid-19 महामारी के कारण स्वयं सेवकों ने जुलाई 2020 से नवम्बर 2020 तक विभिन्न ऑनलाइन गतिविधियों एवं वेबिनार में सहभागिता की।

जुलाई 2020 में NSS विद्यार्थियों ने Online मास्क बनाना, रंगोली, पोस्टर मेकिंग द्वारा लोगों को Covid -19 से बचाव हेतु जागरूक किया। आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड करने की जानकारी दी और उसकी उपयोगिता भी समझाई। अगस्त 2020 में 'आत्मनिर्भर भारत' के उद्देश्य को लेकर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया, जिसमें Vocal for Local के प्रति प्रेरित किया। सितम्बर माह में NSS दिवस पर ऑनलाइन वेबिनार आयोजित किया, जिसमें Covid -19 से बचाव एवं सुरक्षा के उपाय बताये। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में विद्यार्थियों द्वारा घर–घर में Plantation किया गया तथा अपने नजदीकी पार्क की देखभाल करने एवं स्वच्छ रहने की लोगों को सलाह दी गई। दिसम्बर माह में राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों द्वारा स्वच्छता जागरूकता अभियान चला कर जनता को Covid -19 से बचाव हेतु प्रेरित किया गया। स्वयं सेवकों द्वारा मास्क वितरित किये। स्वच्छता पखवाड़ा के अन्तर्गत नुक्कड़ नाटक, श्रमदान, हेंडवाश दिवस, व्यक्तिगत स्वच्छता दिवस, पार्क की सफाई आदि कार्यक्रम कराये गये।

जनवरी 2021 में स्वयं सेवकों द्वारा सामाजिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत Plastic Waste Management पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया। दिनांक 25.01.2021 को यातायात सुरक्षा जागरूकता अभियान कार्यक्रम चलाया गया जिसमें यातायात पुलिस द्वारा विद्यार्थियों को यातायात नियमों की जानकारी दी गई। फरवरी माह में 09.02. 2021 को Personal Hygiene Day मनाया गया। दिनांक 17.02.20 21 को नशा मुक्ति अभियान के अन्तर्गत नुक्कड़ नाटक द्वारा नशे के सेवन से दुष्प्रभावों को दर्शाया गया। मार्च 2021 को 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियाँ स्वयं सेवकों द्वारा आयोजित की गई।

12 मार्च 2021 को ग्राम डोबरा जागी, 16 मार्च 2021 को ग्राम कुलुआ खुर्द तथा 24 मार्च 2021 को ग्राम–सेहतगंज में जाकर ग्रामवासियों को Covid-19 के टीकाकरण के प्रति जागरूक किया, उन्हें पास के स्वास्थ्य केन्द्रों में जाकर

लगवाने के लिये प्रेरित किया। दिनांक 27.03.2021 को स्वयं सेवकों ने महाविद्यालय के आस–पास लगने वाले हाट बाजारों में व्यापारियों, ग्राम वासियों को Covid-19 टीकाकरण के लिये जागरूक किया। जिससे जनसमुदाय कोरोना की महामारी से मुक्त हो सके और एक स्वस्थ, विकसित राष्ट्र का निर्माण हो सके।

'आजादी के अमृत महोत्सव' वर्ष 2021 के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस एवं महात्मा गांधी जी की 152 वीं जयंती पर दिनांक 01/10/2021 को कोरोना नियमों के पालन हेतु 'रोको–टोको अभियान', सेनीटाईजेशन, वैक्सीनेशन, मास्क जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना की महिला इकाई की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गीता चौहान एवं स्वयं सेवकों द्वारा कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन किया गया।

दिनांक 21/10/2021 को प्राचार्य महोदय की अनुमति से महात्मा गांधी जी के स्वतत्रता आंदोलन में योगदान विषय पर डॉ. अनुपमा यादव द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों, महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ.गीता चौहान, प्रोफेसर डॉ.संध्या सक्सेना, डॉ. अर्चना शर्मा इत्यादि शामिल हुए।

दिनांक 05/10/2021 को महात्मा गांधी जी की 152 वीं जयंती पर 'मद्य निषेध सप्ताह' कार्यक्रम के अवसर पर महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा नशा मुक्ति के लिए जन जागृति हेतु नुक्कड़ नाटक विजय मार्केट, बरखेड़ा , भेल में मंचन किया गया। नाटक में महाविद्यालय के विद्यार्थियों–रोहित मालवीय, रोहित राज, आकांक्षा साहू, आकांक्षा सेन, श्रेया दास, बृजेश, आरती गोंड, सागर राजपूत, शिवानी दांगी, भारती साहू, दिव्या कुशवाह, पीयूष नेताम, रोहित प्रजापति, जगदीश खेड़कर ने भाग लिया।

'मद्य निषेध सप्ताह' कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 06/10/2021 को राष्ट्रीय स्वयं सेवकों ने पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान –दिव्या कुशवाह, द्वितीय स्थान–बृजेश कुशवाह, तथा तृतीय स्थान–रोहित मालवीय का चयन किया गया । जिन्हें राष्ट्रीय युवा दिवस पर पुरस्कृत किया जाऐगा। दिनांक 07/10/202 1 को महात्मा गांधी जी की 1 52 वीं जयंती पर 'मद्य निषेध सप्ताह' कार्यक्रम के अवसर पर आदरणीय प्राचार्य– डॉ.मथुरा प्रसाद द्वारा शपथ दिलाई गई। जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थी एवं शिक्षणगण उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सेवा योजना, (महिला) कार्यक्रम अधिकारी–डॉ. गीता चौहान

✠ राष्ट्रीय कैडेटकोर (NCC)

दिनांक 14.09.2012 में महाविद्यालय में एन.सी.सी (राष्ट्रीय कैडेट कोर) का प्रारम्भ हुआ। इस इकाई में कुल 53 सीटें पंजीकृत है। इस महाविद्यालय में एन.सी.सी की आर्मी यूनिट है। एन.सी.सी का मुख्य उद्देश्य देश के युवाओं में चरित्र, अनुशासन, नेतृत्व, धर्म निरपेक्षता, स्पोर्ट्समेनशिप तथा निःस्वार्थ सेवा भाव का संचार करना है। राष्ट्रीय कैडेट कोर का ध्येय 'एकता और अनुशासन हैं।

भोपाल एवं छत्तीसगढ डायरेक्टोरेट से संबद्ध बटालियनों द्वारा समय–समय पर कैम्प आयोजित किये जाते है जिनमें CATC (Combined Annual Training Camp) NIC (National Integration Camp) Trekking Camp, Summer Camp, Army Attachment Camp, IDC (Independence Day Camp) RDC (Republic Day) प्रमुख है। प्रत्येक सत्र में बटालियन द्वारा आयोजित विभिन्न कैम्पों में महाविद्यालय के एन.सी.सी.कैडेट्स द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया जाता हैं। महाविद्यालय में वर्ष 2019–202 1 में कुल 53 कैडेट्स पंजीकृत है जिनमें 8 छात्राएँ है।

इस सत्र में एन.सी.सी. कैडेट्स के द्वारा महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया एवं लोगों को वृक्ष लगाने एवं उनकी देखभाल करने का संदेश दिया गया। महाविद्यालय में कैडेट्स द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का जागरूकता अभियान चलाया गया। महाविद्यालय में एन.सी.सी.कैडेट्स के द्वारा एन.सी.सी. डे का आयोजन बड़े उत्साह से किया

गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में ले कर्नल मेघना दवे ने हिस्सा लिया, साथ ही प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण व महाविद्यालय के छात्रों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। स्वामी विवेकानन्द जयंती पर 'युवा दिवस का कार्यक्रम बटालियन द्वारा लाल परेड ग्रांउड पर आयोजित किया गया, उसमें महाविद्यालय के कैडेट्स ने सहभागिता की।

इस सत्र में कोविड–19 के कारण एन.सी.सी.बटालियन के सारे प्रोग्राम ऑनलाइन आयोजित किये गये, क्योंकि इसमें छात्रों की सुरक्षा बहुत ही आवश्यक थी। योग दिवस पर कैडेट्स के द्वारा लोगों को मास्क पहनने व एक दूसरे से दूरी बनाये रखने व बार बार हाथ धोने का संदेश दिया गया तथा कैडेट्स के द्वारा लोगों को मास्क का वितरण किया गया। कैडेट्स ने पॉलिथिन की रोकथाम के लिये अभियान चलाया। कारगिल दिवस के आयोजन के साथ ही संविधान दिवस पर कैडेट्स को प्राचार्य द्वारा शपथ दिलाई गई एवं ऑन लाइन वेबिनार का आयोजन किया गया।

'गाँधी जयंती पर गांधी जी की प्रतिमा की सफाई व लोगों को स्वच्छ भारत का संदेश एन.सी.सी.कैडेट्स के द्वारा दिया गया। 'नशा मुक्त भारत के लिए रैली द्वारा लोगों को जागरूक किया गया। साथ ही यातायात सप्ताह में महाविद्यालय में यातायात पुलिस के द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे एन.सी.सी.कैडेट्स ने हिस्सा लिया एवं लोगों को यातायात पुलिस के साथ मिलकर सुरक्षित यातायात का संदेश दिया। इस वर्ष कोविड के कारण डे कैम्प का आयोजन बटालियन के द्वारा किया गया, जिसमें एन.सी.सी. कैडेट्स ने हिस्सा लिया।

महाविद्यालय परिसर में एन.सी.सी. कैडेट्स व प्राचार्य के द्वारा वृक्षारोपण किया गया जिसमें एन.सी.सी. प्रभारी डॉ. अर्चना शर्मा भी उपस्थित रही। इस वर्ष कोविड–19 के कारण बटालियन द्वारा डे कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें एन.सी.सी.कैडेट्स ने हिस्सा लिया। दिनांक 12/03/21 को एन.सी.सी. आर्मी बिंग के कैडेट्स ने शौर्य स्मारक परिसर में स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम में सहभागिता की । महाविद्यालय के छात्र अभिषेक सिंह ने आर्मी बिंग परेड की कमांडिंग की । दिनांक 1 4 मार्च 2021 को भोपाल नगरीय प्रशासन द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान साइकिल रैली का आयोजन किया, जिसमें महाविद्यालय के एन.सी.सी.छात्रों ने हिस्सा लिया एवं लोगों को स्वच्छता के लिए जागरूक किया।

दिनांक 15/03/21 को W.W.F- और नेशनल कैडेटस कोर भोपाल ग्रुप ने 'PLASTIC' प्रदूषण के विरूद्ध अभियान में 'एन.सी.सी.कैडेट्स की भागीदारी महत्वपूर्ण हैं' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के सभी एन.सी. सी. कैडेट्स ने सहभागिता की। स्वस्थ भारत अभियान 2.0 में कैडेट्स द्वारा भाग लिया गया 15 अगस्त को एन.सी.सी.कैडेट्स एवं प्राचार्य व महाविद्यालय के प्राध्यापकगण के साथ वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया।

26/10/2021 को एन.सी.सी. प्रथम वर्ष के कैडेट्स की भर्ती एन.सी.सी.बटालियन से आये स्टाफ के हवलदार मनोज कुमार जी एवं हवलदार सुमन कुमार ने कैडेट्स रनिंग बिम और लिखित परीक्षा का आयोजन कर कैडेट्स की भर्ती कार्य को पूरा आयोजन किया । इस भर्ती प्रक्रिया में महाविद्यालय के 100 छात्र–छात्राओं ने सहभागिता की । इस वर्ष 2020–2021 में कुल 53 कैडेट्स पंजीकृत है जिसमें 36 छात्र कैडेट्स एवं 17 छात्रा कैडेट्स है। 26/11/2021 को स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत एन.सी.सी.कैडेट्स द्वारा रैली निकाली गई और लोगों को जागरूक किया गया।

एन.सी.सी. के प्रशिक्षण से छात्रों में समाज सेवा, मिल जुलकर कार्य करने की भावना, नेतृत्व, अनुशासन तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। एन.सी.सी.कैडेट्स को नागरिक सुरक्षा तथा स्वयं की सुरक्षा की उचित शिक्षा दी जाती है जिससे छात्रों में राष्ट्रीय सेवा की भावना जागृत होती है, साथ ही साहसिक कार्य करने की क्षमता विकसित होती है।

जय हिन्द

एन.सी.सी प्रभारी–डॉ. अर्चना शर्मा

✠ प्लेसमेंटसेल

महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए ट्रेनिंग प्लेसमेंट सेल का गठन किया गया है, जिसके द्वारा उन्हें रोजगार से सम्बंधित जानकारी प्रदान की जाती है। इस महाविद्यालय में अथवा अन्य महाविद्यालयों से प्राप्त प्लेसमेंट ड्राइव की जानकारी विद्यार्थियों को दी जाती है, जिससे हमारे विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं। पिछले वर्षों में विद्यार्थी L&T कम्पनी, Indian Oil Corporation, भारतीय स्टेट बैंक, आंगनवाड़ी आदि में रोजगार प्राप्त करने में सफल रहे हैं। विद्यार्थियों को MPEB, केंद्रीय विद्यालय, टोल नाका, भोपाल नगर निगम तथा अन्य कई निजी संस्थाओं में रोजगार प्राप्त हुआ है। अनेक विद्यार्थियों ने स्वरोजगार भी अपनाया है। सत्र 2020–21 में मध्य प्रदेश शासन के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित online प्रशिक्षण कार्यक्रम में, इस महाविद्यालय के 70 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर , महाविद्यालय के 0 5 प्राध्यापकों सहित उनके मार्गदर्शन में online प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के अंतर्गत दिनांक 08.02.2021 से 09.03.2021 तक online आयोजित किया गया। Placement Cell महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के साथ मिल कर कार्य करता है। इसके अंतर्गत प्रति वर्ष मध्य प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित कैलेंडर के अनुसार मासिक गतिविधियाँ समस्त प्राध्यापकों के सहयोग से आयोजित की जाती हैं तथा इन मासिक गतिविधियों से महाविद्यालय के सभी विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं। Placement Cell द्वारा सत्र 2020–21 में पूर्व छात्रों की ट्रैकिंग प्राध्यापकों के सहयोग से की गई तथा उनकी Alumni meet भी सफलतापूर्वक online आयोजित की गई।

✠ कार्यालयीन प्रतिवेदन

महाविद्यालय का कार्यालय अत्यन्त सुव्यवस्थित है। यहाँ पर प्रबंधन एवं वित्तीय संबंधित कार्य सुचारू रूप से संचालित किये जाते हैं। छात्रों की छात्रवृत्ति एवं अन्य कार्य कार्यालयीन स्टाफ के द्वारा सजगता पूर्वक पूर्ण किये जाते हैं जिससे छात्रों एवं अन्य स्टाफ को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। मुख्यलिपिक द्वारा स्टाफ की सर्विस बुक आज दिनांक तक अद्यतन की गई है एवं अग्रणी महाविद्यालय तथा विधानसभा द्वारा चाही गई जानकारी अविलम्ब भेजी जाती है। समय–समय पर उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रेषित आदेश, निर्देशों एवं प्रपत्रों की जानकारी संधारित की जाती है। महाविद्यालय में 2020–2021 के सभी सेवानिवृत्त (06) के प्रकरण,पी.पी.ओ.जारी करते हुए अन्य देयक समय–सीमा में भुगतान किये गये। । कार्यालय लेखा शाखा, मुख्य लिपिक शाखा, छात्रवृत्ति शाखा, छात्र संपर्क शाखा के रूप में विभक्त है तथा उपर्युक्त समस्त कार्य इनके द्वारा सुव्यवस्थित रूप से निष्पादित किए जाते है।

✠ जनभागीदारी समिति

म.प्र.शासन, उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशों के परिपालन में इस महाविद्यालय की जनभागीदारी स्थानीय प्रबंधन समिति का मप्र. सोसायटी एक्ट के अंतर्गत 5 जुलाई 1997 को विधिवत पंजीयन किया गया। महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति में सामान्य परिषद्, प्रबंध समिति एवं वित्त समिति अस्तित्व में हैं। अपनी स्थापना से ही जनभागीदारी समिति महाविद्यालय के अकादमिक उन्नयन के लिए सतत रूप से प्रयत्नशील है। इसका सार्थक परिणाम यह है कि वर्तमान में 'बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भेल, भोपाल' उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय अकादमिक स्तर रखता है। नेक द्वारा इसे B++ ग्रेड प्रदान किया गया है।

वर्तमान में जनप्रतिनिधि के अध्यक्ष नियुक्त होने की प्रत्याशा में कलेक्टर भोपाल के प्रतिनिधि एस.डी.एम., एम. पी नगर, भोपाल इस महाविद्यालय की जनभागीदारी अध्यक्ष के दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं। जनभागीदारी के द्वारा महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को पठन पाठन के लिए यथोचित अधोसंरचना उपलब्ध कराई जाती है। स्ववित्तीय आधार पर पांच रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम बी.कॉम. ट्रेवल टूरिज्म, बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन, बी.एससी. बायोटेक्नोलाजी, बी. एससी.क्लीनिकल, न्यूट्रिशन एंड डायटेटिक्स एवं पी.जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट संचालित है, जिनमें अध्ययन करने के पश्चात् छात्र छात्राएं अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, भारत और विदेशों में भी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रम विषयक प्रतिवेदन

✠ प्रतिभा किरण योजना (2020–21)

मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा पत्र क्रमांक एफ–19–1/08/2– अड़तीस दिनांक 05.01.2008 के तहत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली शहर की मेधावी छात्राओं को उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने के लिये 'प्रतिभा किरण योजना पूरे मध्यप्रदेश में सत्र 2007–08 से प्रारम्भ की गई है। सत्र 2017–18 से यह योजना पूर्णतया ऑनलाइन हो गई हैं। इसके अनुसार आवेदन स्वीकृति व भुगतान की समस्त कार्यवाही ऑनलाइन ही संपन्न की जा रही हैं। म.प्र शासन उच्च शिक्षा विभाग के आदेश क्रं. 685/235/आउशि/2021 भोपाल, दिनांक 24.09.2021 के अनुसार प्रतिभा किरण योजना मे छात्राओं को सिंगल क्लिक के माध्यम से राशि हस्तांतरण/भुगतान के संबंध में नवीन प्रकिया संचालित करना प्रस्तावित है।

योजना हेतु निम्नानुसार पात्रता एवं मापदण्ड निर्धारित किये गये–

1. छात्रा म.प्र. की मूलनिवासी होना चाहिए। 2. गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली 12वीं परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहिए। 3.छात्रा नगरीय क्षेत्र की निवासी होना चाहिए। 4.छात्रा ने जिस सत्र में 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है उसी सत्र में उसका उच्च शिक्षा में प्रवेश होना चाहिए। 5. योजना नगरीय क्षेत्रों में स्थित शासकीय शिक्षण संस्थाओं, अनुदान प्राप्त अशासकीय शैक्षणिक संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में लागू होगी। 6. उच्च शिक्षा विभाग के साथ ही इस योजना का लाभ तकनीकी शिक्षा व चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रवेशित छात्राओं को भी प्रदान किया जाता है। 7. मध्यप्रदेश के आदेश क्रमांक 2042/897/आउशि/छा/2017 भोपाल, दिनांक 20.12.2017 के अनुसार प्रतिभा किरण योजना प्रोत्साहन राशि के रूप में मान्य है। छात्राएं मध्यप्रदेश शासन की अन्य छात्रवृत्तियों के साथ प्रतिभा किरण योजना का लाभ ले सकती है।

इस योजना के अंतर्गत छात्रा को प्रतिमाह रूपये 500/–(पाँच सौ रूपये) की दर से पूरे शैक्षणिक सत्र में 10 माह के लिये रूपये 5000/– (पाँच हजार रूपये) सालाना की आर्थिक मदद दी जाती है। सत्र 2017–18 से यह योजना पूर्णतया ऑनलाइन हो गई हैं। इसके अनुसार आवेदन स्वीकृति व भुगतान की समस्त कार्यवाही ऑनलाइन ही संपन्न की जा रही हैं।

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बी.एच.ई.एल. भोपाल में सत्र 2007–08 प्रारम्भिक सत्र से वर्तमान सत्र 2020–21 तक की पिछले वर्षों की शैक्षणिक सत्रों में योजना से लाभान्वित छात्राओं की संख्या इस प्रकार है:–

Academic Session	General	OBC	SC	ST	Total
2007-08	01	02	01	01	05
2008-09	03	05	02	01	11
2009-10	04	12	04	02	22
2010-11	04	12	08	01	25
2011-12	05	13	09	01	28
2012-13	08	09	08	Nil	25
2013-14	14	11	04	Nil	29
2014-15	15	15	04	Nil	34
2015-16	18	20	05	01	44
2016-17	18	28	07	01	54
2017-18	21	23	09	01	54
2018-19	11	17	07	01	36
2019-20	04	07	06	Nil	17
2020-21	09	05	01	Nil	15

प्रभारी– डॉ. नीलम चोपड़ा

✠ गाँव की बेटी

म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की मेधावी छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए गाँव की बेटी योजना संचालित है। इस योजना में गाँव के स्कूल से 12 वीं कक्षा प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण करने वाली छात्राओं को हर वर्ष 500 रूपये प्रतिमाह की दर से 10 माह तक 5000 रूपये सालाना की आर्थिक मदद दी जाती है। 2008 से क्रियान्वित इस योजना में चयनित छात्रा को उच्च शिक्षा के अंतर्गत विश्वविद्यालय, तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित पाठयक्रमों में भी लाभ पाने की पात्रता है। उक्त योजना का लाभ उठाने के लिए छात्रा को निर्धारित प्रारूप में आवेदन के साथ ग्राम सरपंच का प्रमाण पत्र, शाला प्रमुख का प्रमाण पत्र, मुख्य कार्यपालन अधिकारी का प्रमाण पत्र आवश्यक दस्तावेजों के साथ जैसे मूल निवास प्रमाण पत्र स्वयं के नाम का बैंक अकाउन्ट, जो आधारकार्ड से लिंक होना चाहिए, जाति प्रमाण पत्र, पिछली कक्षा की अंकसूची की छायाप्रति संलग्न करना होते हैं । म.प्र. शासन की यह योजना अब पूर्णतया ऑनलाइन हो गई है। हाल ही में इस योजना के लिए आधार सीडिंग की प्रक्रिया भी अनिवार्य कर दी है। ताकि सिंगल क्लिक के माध्यम से छात्राओं को प्रोत्साहन राशि का हस्तांतरण किया जा सके । बाबूलाल गौर शासकीय महाविद्यालय, भेल, भोपाल में ग्रामीण प्रतिभावान प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्राएं इस योजना से लाभान्वित होकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

सत्र 2020–2021 में गाँव की बेटी योजना हेतु कुल प्राप्त आवेदन पाँच हैं जो जांच प्रक्रिया के पश्चात् स्वीकृत हुए। नवीनीकरण के कुल प्राप्त आवेदन 4 थे। कुल 9 छात्राओं को उक्त प्रोत्साहन राशि 5000 प्रति छात्र के हिसाब से ऑनलाइन भुगतान की गई । इस योजना में कोई भी लंबित प्रकरण महाविद्यालय में नहीं है। सत्र 2021–2022 में भी ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन नवीन छात्राओं के आवेदन के सत्यापन की प्रक्रिया और विगत वर्ष की छात्राओं के नवीनीकरण की प्रक्रिया संचालित है । समय – समय पर शासन के निर्देशों की जानकारी से छात्राओं को निरन्तर अवगत किया जा रहा है, ताकि कोई भी पात्र चयनित छात्रा उक्त योजना के लाभ से वंचित न होने पाये।

प्रभारी – डॉ. अनुपमा यादव

✠ स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ (2020–21)

WEBINAR

S.N.	Date	Topic	No. Of Participants
1	27-Nov-2020	"Geographical Intoducation of India"	145
2	28-Nov-2020	"Rashtriya Shiksha Niti"	126
3	28-Dec-2020	"Career Option and Opportunities in 2021"	80
4	29-Dec-2020	"Atam Nirbhar Bharat"	167
5	30-Jan-2021	"CV Making"	99
6	15-Mar-2021	"Interview Preparation"	67
7	16-Mar-2021	"Group Discussion"	60

अल्पावधि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण

स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के अंतर्गत आयोजित

S.N.	Date	Topic	No. Of Participants
1	08/02/2021 to 09/03/2021	"Behavioral skill"	70
2		“Computer Skill"	
3		“Entrepreneurship Skill"	
4		“E- commerce & Online banking"	
5		“Food stuff manufacturing and Processing"	
6		"Taxation – IT & GST"	
7		"Advanced Agriculture Skill"	
8		"Tourism and Travel Management Skill"	

स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा दिये गये वार्षिक कैलेण्डर अनुसार महाविद्यालय के शिक्षक अभिभावक द्वारा वेबिनार आयोजित कर विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की जानकारी एवं नैतिक शिक्षा प्रदान की गई।

✠ विश्व बैंक पोषितमध्य प्रदेश उच्च शिक्षागुणवत्ता उन्नयन परियोजना

मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा गुणवत्ता उन्नयन परियोजना (MPHEQIP), उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश शासन की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य, छात्रों के शिक्षा परिणामों में सुधार एवं मध्यप्रदेश में उच्च शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाना है। परियोजना के तहत मध्य प्रदेश के 200 महाविद्यालयों का चयन किया गया है। बाबूलाल गौर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल, भोपाल परियोजना के लिए चयनित महाविद्यालयों में से एक है। परियोजना के अंतर्गत महाविद्यालय के विकास एवं शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु अनेक कार्य विगत 3 वर्षों से किए जा रहे हैं। इन कार्यों का संक्षेप में विवरण निम्नानुसार है।

1. परियोजना अंतर्गत विश्व बैंक की सहायता से लगभग 650 लाख की लागत से निर्मित महाविद्यालय का नवीन भवन बनकर तैयार है।
2. परियोजना अंतर्गत लगभग तीन करोड़ की राशि हेतु महाविद्यालय की आईडीपी स्वीकृत की गई है, जिसके तहत महाविद्यालय को फर्नीचर एवं प्रयोगशाला उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं।
3. महाविद्यालय के समस्त आय–व्यय का निर्धारित चार्ट ऑफ अकाउंट के अनुरूप सॉफ्टवेयर के माध्यम से लेखा संधारण किया जा रहा है।
4. प्रतिवर्ष महाविद्यालय की एनुअल रिपोर्ट का वेबसाइट पर प्रकाशन किया जा रहा है।
5. शैक्षणिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों हेतु महाविद्यालय में विगत दो सत्रों में सभी कक्षाओं के समस्त पारंपरिक विषयों हेतु रेमेडियल कक्षाओं का संचालन किया गया। सत्र 2019–20 लाभान्वित विद्यार्थी–265, सत्र 2020–21 लाभान्वित विद्यार्थी–415 6
6. विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के संतुष्टि के स्तर को मापने हेतु विद्यार्थी संतुष्टि सर्वेक्षण एवं प्राध्यापक संतुष्टि सर्वेक्षण का कार्य शासन द्वारा निर्धारित मानदंड के अनुरूप किया गया।
7. मार्च 2021 में महाविद्यालय का अकादमिक एवं प्रशासनिक ऑडिट शासन के निर्देशानुसार किया गया।
8. एलुमनी मीट के माध्यम से एवं अन्य ऑनलाइन माध्यमों से स्टूडेंट ट्रैकिंग का कार्य पूर्व विद्यार्थियों को ट्रैक करने एवं उनकी प्रगति जानने हेतु किया गया।
9. परियोजना अंतर्गत अकादमिक उत्कृष्टता गतिविधियों हेतु महाविद्यालय को रुपए दो लाख की राशि प्राप्त हुई। उक्त धनराशि से सत्र 2019–20 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को औद्योगिक एवं शैक्षणिक भ्रमण हेतु पीथमपुर, मांडू एवं महेश्वर ले जाया गया। अकादमिक उत्कृष्टता गतिविधियों के अंतर्गत सत्र 2020–21 में राष्ट्रीय कार्यशाला, राष्ट्रीय वेबिनार, विभिन्न विषयों में विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान एवं फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

✠ युवा उत्सव

युवा उत्सव महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक, रचनात्मक और बहुमुखी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने का सशक्त माध्यम है। सत्र 2019–2020 में महाविद्यालय के युवा उत्सव का आंरभ प्राचार्य डॉ. मथुरा प्रसाद के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हुआ । दीप प्रज्वलन, सरस्वती पूजन, स्वागत गीत एवं उद्‌बोधन के पश्चात् प्रतियोगिताओं का विधिवत आयोजन हुआ। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे– वादविवाद, वक्तृता, रंगोली, एकलगायन, एकल नृत्य, समूह नृत्य, प्रश्न मंच तथा एकांकी (हास्य नाटिका) आयोजित की गई। इन सभी में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। 'एक कदम स्वच्छता की ओर' केवल सरकार का दायित्व है, वादविवाद के इस विषय पर पक्ष में एम.ए. प्रथम सेम.के आनंद यादव तथा विपक्ष में बी.एससी तृतीय सेम. की प्रिया पांडे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

एकल नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बी.कॉम. प्रथम वर्ष की पूजा प्रसाद रही। समूह नृत्य में प्रथम स्थान पूनम कोची समूह ने प्राप्त किया । बी.ए. द्वितीय वर्ष के आशीष रजक एकल गायन प्रतियोगिता में प्रथम रहे । रंगोली में बी.कॉम प्रथम वर्ष की आकांक्षा प्रथम स्थान पर रही। एकांकी (हास्य नाटिका) 'अंधेर नगरी' पर आधारित थी। कार्यक्रम का समापन प्राचार्य डॉ. मथुरा प्रसाद द्वारा विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण से हुआ।

✠ वार्षिक स्नेह सम्मेलन 'विहान' (2019–20)

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भेल भोपाल का वार्षिकोत्सव विहान' का आयोजन दिनांक 7 एवं 8 फरवरी 2020 को किया गया। दिनांक 7 फरवरी 2020 को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मथुरा प्रसाद जी द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ 'विहान' का शुभारंभ किया गया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहित किया छात्रसंघ प्रभारी डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव ने सभी का अभिवादन करते हुये 'विहान' वार्षिक स्नेह सम्मेलन में आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंशुबाला मिश्र द्वारा किया गया ।

दो दिवसीय विहान वार्षिकोत्सव का प्रथम दिवस पारंपरिक दिवस के रूप में मनाया गया 'इतिहास के पन्नों से' शीर्षक के अन्तर्गत विविध वेशभूषा प्रतियोगिता आकर्षण का केन्द्र रही । छत्रपति शिवाजी के रूप में अपनी प्रस्तुति से एम. एससी. फाइनल बॉटनी के छात्र राघव सोनी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा गीतिका राजपूत ने एकल नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं बी.एससी.तृतीय वर्ष की छात्रा मानसी शर्मा ग्रुप ने समूह नृत्य में प्रथम स्थान अर्जित करने में सफलता प्राप्त की।

गांधी जी पर आधारित गीत प्रतियोगिता में बी.एससी. तृतीय वर्ष की प्रिया पांडे अपनी मधुर प्रस्तुति से प्रथम एवं 'गांधी जी हमारी स्मृति में' प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र सौरभ तिवारी प्रथम स्थान पर रहे। तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में बी.कॉम द्वितीय वर्ष के छात्र प्रद्युम्न गिरिराज प्रथम स्थान पर रहे। रिजवाना शाह बी.एससी. प्रथम वर्ष, रिया सिंह बी.ए. द्वितीय वर्ष, रश्मि गुप्ता बी.एससी. प्रथम वर्ष ने क्रमशः मेंहदी, सलाद सज्जा एवं रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बी.ए. द्वितीय के प्रतीक मर्सकोले ने अपनी सृजन शीलता के कारण 'बेकार से साकार' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्र छात्राओं को प्राचार्य द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन 'विहान' 2019–20 के अंत में छात्रसंघ प्रभारी डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव द्वारा प्राचार्य एवं समस्त प्राध्यापकगण, अतिथि विद्वान, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी आदि सभी महाविद्यालयीन परिवार का आभार व्यक्त किया गया।

महिला सशक्तीकरण : वर्तमान परिदृश्य

व्रतिका तिवारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

देश में महिला सशक्तीकरण की पूर्व की स्थिति और वर्तमान समय की स्थिति में बहुत परिवर्तन आया है। पूर्व में महिलाएं केवल पारिवारिक स्तर पर ही अपना योगदान देती थीं, लेकिन आज के समय में पारिवारिक स्तर के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तर पर भी अपना योगदान दे रही हैं। अगर महिलाएं इसी प्रकार सशक्त होने लगी तो वह दिन दूर नहीं, जब महिलाओं को पुरूषों के समान ही दर्जा प्राप्त होगा, जिससे वह देश निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभा सकेंगी। आधुनिक काल से ही समाज में महिलाओं के प्रति चेतना जाग्रत हुई। महिलाओं के प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा। बंगाल में राजा राममोहन राय और उत्तर भारत में महर्षि दयानंद सरस्वती ने महिलाओं को पुरूषों की अनाचार छाया से बचाने के लिए क्रांति का बिगुल बजाया। विजयलक्ष्मी पंडित, कमला नेहरू, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडू, इंदिरा गाँधी, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि के नाम विशेष हैं।

वर्तमान परिदृश्य को देखें तो ज्ञात होगा कि महिलाएं पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सुरक्षा आदि सभी क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। सुषमा स्वराज, निर्मला सीतारमण, चंदा कोचर, सुमित्रा महाजन, मीरा कुमार, अवनि चतुर्वेदी, भावना कस्तूरी, मैरीकॉम, तान्या शेरगिल, हिमा दास, दुती चंद आदि के नाम विशेष हैं। जिनकी देश के निर्माण में अहम भूमिकाएं हैं।

सरकार द्वारा स्वास्थ्य, समानता, रोजगार व कानूनी सहायता के द्वारा महिलाओं को सशक्त किया जा रहा है। आर्थिक स्तर पर महिलाओं को सशक्त करने के लिए विभिन्न उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की जा रही है तथा लड़कियों के लिये सुकन्या समृद्धि योजना का प्रावधान किया गया है, जिससे लड़कियों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। सुरक्षा की दृष्टि से भी सरकार द्वारा घरेलू हिंसा अधिनियम (2005), कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न के विरूद्ध कानून (2013), प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (2016), ऑनलाइन शिकायत प्रणाली, महिला हेल्पलाइन और पैनिक बटन जैसे प्रयोग किये गये। इसके अलावा महिला सशक्तीकरण को ध्यान में रखते हुए अत्यावश्यक तीन तलाक कुप्रथा को समाप्त कर दिया गया है।

शिक्षा के स्तर पर भी बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लड़कियों और लड़कों का समान रूप से प्रवेश मिलता है। राजनैतिक स्तर पर भी महिलाओं को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। इसके लिए पंचायती चुनावों में महिलाओं के 33 प्रतिशत आरक्षण का नियम तैयार किया गया है, जबकि कुछ राज्यों में आरक्षण 50 प्रतिशत तक कर दिया गया है।लोकसभा एवं राज्य विधान सभाओं में भी महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है।

इन कानूनों के बाद भी वर्तमान में सामाजिक और सियासी दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति नाजुक है। पंचायत मुखिया पति' और 'सरंपच पति की परम्परा के कारण महिला सशक्तीकरण के मकसद को पूरा नहीं किया जा सका है। लैंगिक असमानता बढ़ी है, जिस कारण नीति आयोग द्वारा भी महिला सशक्तीकरण को लेकर चिंता व्यक्त की गई है। विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी की गई जेंडर गैप इण्डेक्स 2019–20 में भारत ने 112वीं रैंक हासिल की है, जो 4 पायदान नीचे गिर चुकी है। पुरुषों की तुलना में सभी कार्य क्षेत्रों में भी महिलाओं की भागीदारी कम है। इसके अलावा कन्या भ्रूण हत्या तथा महिला अपराधों में कमी नहीं आई है।

16 दिसम्बर 2012 में हुये निर्भया के सामूहिक दुष्कर्म के बाद कठोर कानून बनाये जाने पर भी बलात्कार, हिंसा और छेड़खानी के मामलों में कमी नहीं आई है। राष्ट्रीय अपराध अन्वेषण ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की रिपोर्टिंग पहले से अधिक हो रही हैं तथा अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है। प्रौद्योगिकी के दुरूपयोग के कारण भी अपराधों में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में प्रति 10 लाख व्यक्तियों पर केवल 18 न्यायाधीश हैं। भारत में सभी न्यायालयों में लगभग 3 करोड़ मामले लंबित हैं, इनमें से कई मामलें लंबे समय से लंबित हैं। अंग्रेजी की कहावत "Justice delayed is justice denied" भारतीय संदर्भ में चरितार्थ होती है।

अतः इसके लिए आवश्यक है कि ग्रामीण महिलाओं को शिक्षित कर उनके कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाये। लैंगिक समानता को बढ़ाया जाये। प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुये दुरूपयोग पर प्रतिबंध लगाया जाये। न्यायालयों में न्यायाधीशों की रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ की जायें, जिससे सरेआम घूम रहे दोषियों को शीघ्र ही सजा दी जा सके और यदि हम खुशहाली लाना चाहते हैं, तो हमें महिलाओं की अभूतपूर्व क्षमताओं का विकास करना तथा सदियों से चली आ रहीं रूढ़िवादी विचारधाराओं में परिवर्तन लाना होगा जिससे महिलाएं सशक्त होकर सभी क्षेत्रों में अपनी अस्मिता को बनाये रख सकें।

हिन्दी : वर्तमान परिदृश्य

सौरभ तिवारी
बी.ए. तृतीय वर्ष

प्रत्येक मनुष्य की कोई न कोई मातृभाषा होती है उसे उस भाषा से स्नेह, मोह, गर्व हो यह स्वाभाविक है। भारत में प्रचलित हिंदी 40 करोड़ लोगों की मातृभाषा और दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जहां दुनिया की अन्य भाषाओं को बोलने वाले अपनी भाषा को प्रसारित करने के लिए सजग और संवेदनशील दिख रहे हैं, वहीं हिंदी भाषी अपनी भाषा को लेकर ना तो संवेदनशील है, और न ही उसे प्रसारित करने के लिए दृढ़ निश्चयी बस जड़ बनकर हिंदी को अवनति की ओर जाते देख रहे हैं। इसका अनुमान इस बात से लगा सकते हैं कि आज का ज्यादातर हिंदी भाषी अंग्रेजी बोलने में सक्षम नहीं है,कुंठित है, हिंदी भाषी व्यक्ति अपनी आपसी बातचीत में अंग्रेजी का प्रयोग कर खुद को ज्यादा गौरवान्वित महसूस करता है, शहरों के साथ–साथ गाँव में भी अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति का ज्यादा सम्मान कहीं ना कहीं चिंता का विषय प्रतीत होता है। रामविलास शर्मा जी ने कहा था–हिंदी भाषी लोगों में जातीय चेतना है या नहीं? जैसे महाराष्ट्र के लोगों में है, तमिलनाडु के लोगों में है, वैसी जातीय चेतना हमारे यहां है या नहीं? मेरी समझ में इस चेतना का बहुत कुछ अभाव है।'

भाषा विचारों का आदान प्रदान करने का जरिया मात्र है तो फिर किसी भाषा को लेकर इतनी हीनता और किसी भाषा को लेकर इतना सम्मान हमारी सोच का स्तर दिखलाती है, किसी दूसरी संस्कृति, भाषा के पीछे पागलों की तरह भागना और अपनी संस्कृति या भाषा के प्रति हीन ग्रंथि से भरा होना भी आज हिंदी भाषी लोगों की एक विशेषता बन चुकी है।, गांधीजी भी दूसरी संस्कृति को अपनाने के विषय में कहते थे–मैं केवल खिड़कियां खुली रखूंगा दरवाजे हमेशा बंद रखूगा। जिससे दूसरी संस्कृति की केवल अच्छी बातें हम अपनाएं। 2

विचारणीय यह भी है कि आखिर अंग्रेजी का इतना वर्चस्व भारत में क्यों है? भारत की केवल 10 प्रतिशत जनसंख्या ही अंग्रेजी का प्रयोग करती है. उसमें भी ज्यादा से ज्यादा 2 से 3 प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी का दैनिक रूप में प्रयोग करते हैं और यह 2 से 3: लोग आभिजात्य वर्ग के ही हैं। इससे यह भी समझ में आता है कि भारत का मध्यम व निम्न वर्ग किस तरह आभिजात्य वर्ग का अनुसरण व उनके जैसे बनने की कोशिश में अपने ही भाषा को हीन समझने लगा, इसका दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि किस प्रकार किसी भी देश को चलाने में 2 से 3 प्रतिशत आभिजात्य वर्ग गहरा प्रभाव डालता है व बाकी को प्रभावित करता है। आज सिविल सेवा व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में हिंदी को लेकर जो संवेदनशीलता का अभाव दिख रहा है उसका एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि वहाँ आभिजात्य वर्ग का दबदबा है।

आप किसी भाषा का महिमामंडन करने के लिए अन्य भाषाओं को नीचा दिखाए यह उचित नहीं होगा क्योंकि प्रत्येक भाषा का महत्त्व है। अंग्रेजी, तेलुगु ,या तमिल जैसी भाषाओं को हम हिंदी से कमतर साबित करें यह भी अपनी संस्कृति व संस्कारों का अपमान ही होगा अतः जिसे अंग्रेजी व दूसरी भाषाएं सीखना है सीखें, लेकिन वरीयता क्रम में वह मातृभाषा (हिंदी) के बाद होनी चाहिए। आज भारतीय शहरी युवा वर्ग की सबसे बड़ी समस्या उसे अपनी मातृभाषा का न तो ज्ञान है, न तो उसका महत्त्व पता है। एक अंग्रेजी माध्यम का बच्चा जो दिनभर उपयोग तो हिंदी करता है लेकिन हिंदी लिखने में सहज नहीं है। ज्यादातर अंग्रेजी माध्यम के बच्चे हिंदी को तुच्छ समझने लगे। संभवतः अपनी आने वाली पीढ़ियों से अंग्रेजी में ही संवाद करेंगे, स्वाभाविक भी है, जो चीज हमें आसानी से नहीं मिलती व अपने आसपास में थोड़ा अलग बनाती है हमें ज्यादा आकर्षित करती है। लेकिन हिंदी भाषी व्यक्ति का अपनी भाषा के प्रति कम होता लगाव हिंदी के अस्तित्व को मिटाने का प्रथम चरण है।

आज से 2000 साल पहले किसी ने संस्कृत के लिए यही बात कही होगी और तब अन्य संस्कृत भाषियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया होगा, जिस प्रकार संस्कृत को समाप्त करने का कारण संस्कृत भाषियों की रूढ़िवादिता बनी, उसी

प्रकार हिंदी को समाप्त करने का कारण अन्य भाषाओं के प्रति अत्यधिक आकर्षण होना होगा, यदि आप अपनी भाषा को लोकप्रिय बनाना चाहते हैं तो भाषा को लोगों के स्तर पर लाना तथा समाज को उसके महत्त्व से अवगत कराना होगा, युवा वर्ग में घट रहा हिंदी का महत्त्व सरकार का 'हिंदी के विकास में उचित प्रतिबद्धता न दिखाने के कारण भी हैं। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा आयोग वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, द्वारा किए गए कठिन व अलोकप्रिय अनुवाद ने भी हिंदी की लोकप्रियता को कुछ हद तक क्षीण किया है। तमिल, तेलुगु , मराठी, बांग्ला भाषी लोगों की तरह हिंदी भाषी व्यक्ति का अपनी मातृभाषा के प्रति लगाव न होना भी हिंदी को हानि पहुंचाता है। हिंदी क्षेत्र का दूसरे देशों में आकर्षण ना होना, उचित बाजार ना होना, उचित रोजगार पैदा ना कर पाना भी हिंदी का महत्त्व कम करता है। आज अमेरिका जैसे देशों का विकसित युवा वर्ग मंदारिन (मैंडरिन) चीन की भाषा की तरह खिंचा चला जा रहा है तो इसका कारण चीन में उपलब्ध बाजार व रोजगार की संभावना ही है । यदि हम अपनी मातृभाषा के प्रति संवेदनशील व सहज नहीं हुए तो आने वाले 200 से 300 सालों में हिंदी का अस्तित्व मिट जाएगा।

यदि हमें हिंदी को सुरक्षित रखना है तो युवा वर्ग के बीच उसे आकर्षण का केंद्र बनाना होगा। हमें विचार करना होगा कि जो युवा अंग्रेजी बोलने में सहज महसूस कर रहा है वह अपनी मातृभाषा बोलने में इतना असहज महसूस क्यों कर रहा। सरकार को भी हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाना आवश्यक है जिससे हमारी भाषा और समृद्ध व सुदृढ़ बने। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों से भी हिंदी में संवाद करना होगा व उन्हें इसका महत्त्व बताना होगा। अपनी मातृभाषा से उन्हें गहराई से परिचित कराना होगा।

भारतेंदु जी ने कहा था–
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल

संदर्भ सूची

1 . हिंदी जाति की अवधारणा–रामविलास शर्मा
2. हिंद स्वराज– महात्मा गांधी

कहानी

गठरी

शुभम राठौर
बी.ए. तृतीय वर्ष

चार घण्टे से कमरे में बंद रहने से मन ऊब गया और मैं सड़क के किनारे आकर बैठ गया। हाथ में अर्थशास्त्र की पुस्तक है। चारों तरफ बड़ी–बड़ी इमारतें बनी हुई हैं और इन्ही इमारतों के बीच लेटी हुई यह काली सड़क, काली होते हुए भी खंभे पर लगे स्ट्रीट लाइट के कारण चमक रही है। सामने बगीचा बना है, जिसमें कुछ नीम के पेड़ लगे हैं । बैठने के लिए तीन बेंच रखी हैं, लेकिन बगीचे में कोई भी व्यक्ति नजर नहीं आ रहा है। दाईं तरफ, सड़क की दूसरी ओर मंदिर बना है, जिसके प्रवेश द्वार पर (जो कि किसी जेल में लगे मोटी सलाखों के दरवाजे जैसा है) ताला लगा है। पुजारी नौ बजे ही मंदिर के दरवाजे बंद करके चला जाता है लेकिन मंदिर में जल रहे दीपक की रोशनी के कारण भगवान की मूर्ति को यहीं से देखा जा सकता है।

मन में अचानक सवाल आया – इस रास्ते पर तो रात के ग्यारह बजे तक आवाजाही रहती है, तो फिर आज क्यों इतना सन्नाटा छाया है! तभी अचानक ठंडी हवा का एक झोंका आता है और कान में जाकर बुदबुदाता है– 'जनाब अभी हम निकले हैं इस काली रात की सैर करने, इसलिए सब अपने घरों में जाकर बैठ गए हैं। उसके कान में कहने से मुझे भी पता चला, आज ठंड ज्यादा है।

रास्ता पूरी तरह निर्जन नहीं था, एक–दो लोगों को आते–जाते देखा जा सकता था। फुल्की वाला अपने ठेले को ढकेलते हुए, तेजी से प्रस्थान कर रहा था। एक नौजवान अपनी बहुमंजिला इमारत से नीचे आया। पर्याप्त गर्म कपड़े पहने हुए, अपना वजन कम करने के लिए, वह एक तरफ से दूसरी तरफ चलने लगता है।

रात के दस ही बजे थे अभी, लेकिन आसमान से ठंड का कहर बरस रहा था। इस कड़ाके की ठंड के बावजूद मैंने सोचा उस घुटन और बदबू भरे कमरे में जाने से अच्छा है, कुछ देर और इसी स्ट्रीट लाइट की रोशनी में अर्थशास्त्र का अध्ययन कर लिया जाए। ध्यान को पुस्तक में लगाए हुए था, तभी अचानक पैरों की आहट सुनाई देती है। अपनी दाईं तरफ देखा तो पता चला, लगभग छब्बीस वर्षीय हट्टा–कट्टा नौजवान अपने कुत्ते के साथ,इसी तरफ चला आ रहा है। शरीर पर कपड़ों का सुरक्षा कवच पहने हुए, ऐसा लग रहा था, मानो ठंड से युद्ध करने निकला हो। एक हाथ में कुत्ते का पट्टा पकड़े हुए और दूसरे हाथ को मस्ती में झुलाता हुआ चला आ रहा है।

उसका कुत्ता– गले में पट्टा होने के बावजूद, मोहल्ले में घूमने वाले आवारा कुत्तों का राजा लग रहा था। जबकि इस कड़ाके की ठंड में आजादी से घूमते रहने के बाद भी ये कुपोषण के शिकार आवारा कुत्ते, जिनकी खाल के बाल खुजली की वजह से झड़ गए हैं, उसकी प्रजा लग रहे थे।

मंदिर के सामने आते ही नौजवान ने, मंदिर के पट बंद होने के बाद भी, अपने दोनों हाथ जोड़कर भगवान को प्रणाम किया। पट्टा हाथ से छूटते ही कुत्ता मंदिर के बाहर बैठे एक आवारा कुत्ते के पास जाकर भौंकने लगता है। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह उससे हाल–चाल पूछ रहा हो कि, जनाब कैसे हैं आप? आज कुछ भोजन–पानी मिला भी या खाली पेट ही सो रहे हो?

उस बड़े बाल वाले विलायती कुत्ते के भय से पास में ही, मंदिर के बाहर सो रहा बूढ़ा व्यक्ति उठ जाता है और मंदिर की दीवार से चिपक कर खड़ा हो जाता है। वह अत्यंत काला था। उसके कमजोर और दुबले शरीर पर कपड़े इतने कम थे कि उसकी हड्डियों को यहीं से गिना जा सकता था। उसका शरीर सूखी हुई लकड़ी की तरह लग रहा था। उसके मैले और उलझे हुए बालों को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसने कई दिन से नहाया नहीं है। उसके घुटने कुछ आगे की तरफ मुड़े हुए थे। पेट पीठ में धंसा हुआ था। ठंडऔर भय से काँपते शरीर को वह अपने दुर्बल पैरों के सहारे लिए खड़ा हुआ था। उसके दाँत किटकिटा रहे थे और चेहरे पर खामोशी की लकीरें खिची हुई थीं।

तभी वह नौजवान अपने कुत्ते को बिस्किट खिलाने लगता है और उसे चूम कर उसके शरीर को अपने हाथों से

सहलाते हुए अपनी तरफ टकटकी लगाकर देख रहे उस बूढ़े से (जिसका ध्यान बिस्किट की तरफ था) चिल्लाते हुए कहता है – 'अरे तमीज नहीं है क्या? दूर हट। ऐसे क्या देख रहा है ?' उस बूढ़े व्यक्ति का शरीर दोबारा काँप जाता है और सहसा उसकी आँख भर जाती हैं।

लेकिन नींद और शायद भूख के कारण, झूलते हुए उसके शरीर में अब इतनी ऊर्जा न थी कि वह कहीं और जा सके, इसलिए भगवान का नाम लेकर वहीं बैठ जाता है और वह नौजवान बचे हुए बिस्किट अपने जेब में रखते हुए कुत्ते के साथ, मेरे सामने से निकलता हुआ, अपने हाथों को उसी मस्ती में झुलाते हुए आँखों से ओझल हो जाता है।

रात गहरा रही थी। वह मोटा व्यक्ति भी अपनी बहुमंजिला इमारत में जा चुका था। मोहल्ले की इमारतों की खिड़कियों से आने वाला प्रकाश भी अब नहीं आ रहा था । लगता था सभी सो गए हैं और आसमान के सभी तारे जाग कर, इस निद्रामग्न संसार को निहार रहे हैं।

मैं उस बूढ़े की उठती–गिरती साँसों को एकटक देखते–देखते कहीं खो गया । जब दोबारा ध्यान उसी तरफ गया तो देखा कि अब उसकी साँसें कुछ थम गई हैं। शायद वह सो गया था।

चारों तरफ गहरी शांति थी, घना कोहरा था, स्ट्रीट लाइट की रोशनी में अब धीरे–धीरे सब कुछ धुंधला दिखने लगा था ।

मेरी आँखें भी अब और देर तक खुली रहना नहीं चाहती थीं। मैं पुस्तक उठाकर कमरे में चला गया। मैंने सोना चाहा लेकिन तभी शरीर में ठंड की फुरहरी महसूस हुई और मन में विचार आया– पटले पर रखी पुराने कपड़ों की गठरी से कुछ कपड़े उसे दे दूं। लेकिन ठंड बहुत थी और मैं अपने विचार को बदलते हुए यह सोचकर सो गया की, कल देखा जाएगा।

अगली शाम कॉलेज से आकर जब गठरी खोली तो देखा कि उसमें एक पुरानी चादर भी रखी हुई है। पुस्तक और चादर लेकर मैं उसी खंभे के नीचे जाकर बैठ गया। जब लंबे समय के बाद भी वह बूढ़ा नहीं आया तो मुझसे रहा नहीं गया और मैंने मंदिर के पुजारी से पूछा – आज वह व्यक्ति नहीं आया, जो कल रात यहीं सो गया था?

पुजारी – ''नहीं । अब कैसे आएगा?''

''क्यों, क्या हुआ?''

''उसकी तो मृत्यु हो गई।

''क्या? मृत्यु हो गई! कब ? कैसे?''

पता नहीं मुझे तो सड़क पर झाड़ू लगाने वाले ने बताया था कि सुबह मंदिर के बाहर एक भिखारी मूर्छित पड़ा था। जब उसने एंबुलेंस बुलाई तो पता चला कि उसकी मृत्यु हो गई है। फिर पुलिस भी आयी और ले गए उसे एंबुलेंस में।

मैं स्तब्ध रह गया और मन में अचानक कई सवाल – जवाब आने – जाने लगे। ऐसा कैसे हो सकता है, वह भगवान के दर पर था? क्या उसने उसे बुलाया नहीं होगा, कि आओ, इस ठंड में अंदर आओ? लेकिन बुलाता भी कैसे? अगर हमने उसे कभी सोते हुए नहीं देखा, तो कभी जागते हुए भी तो नहीं देखा। क्या वह खुद नहीं जा सकता था भीतर ? कैसे जाता !ताला जो लगा था दरवाजे पर।

सो गया वह वहीं, उस धूल–मिट्टी की सेज पर, बिना कुछ ओढ़े हुए।

वह तो चला गया और अब कभी नहीं आएगा लौटकर, लेकिन पता नहीं क्यों? अब उस जगह पर पढ़ने में मन नहीं लगता ! ध्यान बार–बार उसी तरफ चला जाता है और आँखों के सामने उस रात का दृश्य आ जाता है और मुझसे पूछता है ''क्यों मैं उसी रात नहीं खोल सका, वह पुराने कपड़ों की गठरी?''

बापू

शुभम राठौर
बी.ए. तृतीय वर्ष

राष्ट्रपिता की पदवी पर
यूँ ही नहीं बैठाया है,
आज जो नाम है तेरा
तेरे कर्मों की माया है

दुनिया करती आज नमन तुझे
प्रभाव तेरे विचारों का
दुनिया पर छाया है
लेकिन बीच इसी के
प्रश्न एक आया है –

बिठाया तुझे दिलों में
या सिर्फ बनाकर मूर्तियाँ
चौराहों पर बैठाया है?

लेकर चेहरा तेरा
अपने चेहरे पर
लगाया है !

मुस्कान

करता था इंतजार
कभी तुम आओगी
कितनी उम्मीदें!
कितनी आस!

लेकर सब अपने साथ,
होकर मुझसे खफा
करके मुझे खामोश
बस कुछ क्षण में ही

तुम चली गईं
मुस्कान !

माँ

आरती मीणा
एम.ए. (राजनीति विज्ञान)
प्रथम सेम.

माँ की महिमा का यहाँ, क्या–क्या करे बखान।
माँ के कद के सामने फीका है आसमान।।

फीका है आसमान, माँ की महिमा न्यारी।
माँ ना हो तो, सूनी दुनिया सारी।।

माँ ना हो तो जगत में, सूना सभी जहान।
माँ की कोख से हुए, सभी भक्त भगवान।।

सभी भक्त भगवान, माँ का पार ना पाया।
माँ के आँचल के आगे, फीकी दुनिया की माया।।

माँ की ममता है गजब, माँ ममता का ज्वार।
माँ के आंचल से सदा, बहे स्नेह दुलार।।

बहे स्नेह दुलार, माँ ना होय कुमाता।
जग में आने वालों का , प्रथम नाम है माता।।

माँ का आँचल है अजब, कुदरत का वरदान।
माँ की कोख से हुए, राम – श्याम भगवान।।

राम–श्याम भगवान, माँ सा कोई ना दूजा।
रहे जब तक कायनात, होगी माँ की पूजा ।।

एक छोटी सी आवाज हूँ मैं

अवनीश नापित
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक छोटी सी आवाज हूं देश की, मुझे दबना नहीं है।
हिंदू मुस्लिम बनकर आपस में लड़ना नहीं है।
जब भी ललकारें शत्रु, उससे हमें डरना नहीं है।
जीत लेंगे सारी दुनिया को अगर हम एक साथ हों,
लोग क्यों लगे हैं हमें तोड़ने में
इस तरह हमें टूटना नहीं है।।
एक छोटी सी आवाज हूं देश की, मुझे अब दबना नहीं है।।

सबसे पहले तो हम एक भारतीय हैं, हमें मिलकर रहना है।
मुझे अपनी भारत मां से कई बातें कहना है।
सुला लो अगर तुम अपनी गोद में तो मुझे कोई भूलेगा नहीं।
हर जज्बे को कामयाबी की भूख लगेगी,
पर उस कामयाबी की भूख को मिटने देना नहीं है।
एक छोटी सी आवाज हूँ देश की मुझे अब दबना नहीं है।

हमें सबका साथ चाहिए देश को कामयाब बनाने में।
हमें हक नहीं है किसी को नीचा दिखाने का।
हंसते होंगे हमारे सारे दुश्मन हमें यूं आपस में लड़ता देखकर।
हमें इस तरह लड़कर दुश्मन को हंसाना नहीं है।
हमें मिलकर बड़ी आवाज बनना है इस तरह हमें दबना नहीं है।
एक छोटी सी आवाज हूं देश की मुझे अब दबना नहीं है।

सफलता ही हैं मंजिल

प्रियंका राठौड़
M.Sc. 1st semester

करने लगो कोशिश मौके की न तलाश करो,
सफलता ही है मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।
खुद ही आगे बढ़ो, सहारे का न इंतजार करो,
सफलता ही हैं मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।

बदल सकती हैं तकदीर संघर्षों से न डरा करो,
सफलता ही हैं मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।
थकने का समय कहां,आगे बढ़ो,न विश्राम करो,
सफलता ही हैं मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।

राह पर चलना हैं अकेले, दूसरों से न आस करो,
सफलता ही हैं मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।
खुद अपनी राह हैं बनाना,भाग्य पर न विश्वास करो,
सफलता ही हैं मंजिल, तुम्हें बनना हैं इसके काबिल।

शिक्षा का वरदान

शिक्षा सभ्यता और संस्कार सिखाती है,
जीवन के सभी मूल्यों का ज्ञन कराती है,

अगर ख्वाब है आसमान में उड़ने का,
तो शिक्षा ही है साधन आगे बढ़ने का,

शिक्षा से ही मिलता है समाज में सम्मान,
बुद्धिहीन को बुद्धि और अज्ञानी को ज्ञान,

शिक्षा से ही हुआ अमर महापुरुषों का नाम,
चाहे वह गांधी हो, आंबेडकर हों या हो कलाम,

कभी नहीं मांगनी पड़ेगी हमें भिक्षा,
अगर पा गए हम सही शिक्षा,

शिक्षा है सबसे उत्तम संपदा,
यह काम आएगी हर विपदा में,

शिक्षा समृद्ध जीवन का आधार,
करती सभी कार्य साकार,

जिसे मिल जाता है शिक्षा का वरदान,
उसका व्यक्तित्व कहलाता है महान,

साहित्य और समाज का अंतरसम्बंध

डॉ. अंशुबाला मिश्र
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

साहित्य समाज की अभिव्यक्ति होता है। अभिव्यक्ति में वे सारे अवयव विद्यमान रहते हैं, जिनके माध्यम से समाज का सर्वांगीण स्वरूप स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया जाता है। ये अवयव भाषा, भाव, प्रतीक, अलंकार कई रूपों में प्रयुक्त होते हैं, जिनके कारण अभिव्यक्ति की तीव्रता, स्पष्टता, उद्देश्य, प्रभावोत्पादकता, जिज्ञासा सब कुछ द्योतित होता है। समाज में व्याप्त ज्ञान परम्परा, लोक परम्परा, सांस्कृतिक परम्पराएं, अव्यवस्था, कुरीतियाँ सारे दृश्य–अदृश्य तत्व साहित्य के माध्यम से ही व्यक्त होते हैं। सामाजिक सरोकार को वहन करने वाला प्रत्येक युग का साहित्य उस युग का प्रतिबिम्ब होता है। इन प्रतिबिम्बों में बनते बिगड़ते रूप उस युग के साहित्य एवं समाज के अंतरसंबंधों को उद्घाटित करते है। समाज से कटा हुआ साहित्यकार मात्र कोरी कल्पनाओं के सहारे तिलिस्म साहित्य का सृजन भर कर पाता है। ऐसे साहित्य का प्रभाव देशकाल परिस्थिति पर लेशमात्र भी नहीं पड़ता भले ही एक विधा के प्रतिपादन में वह सफल हो जाये। साहित्यकार बौद्धिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, अतः उसका दृष्टिकोण सूक्ष्म एवं गंभीर होने के कारण कभी कभी जनमानस के लिए उसका साहित्य भी दुरूह एवं कम ग्राह्य हो जाता है, फिर भी उसके कुछ बौद्धिक अध्येता रहते हैं, किन्तु सीमित वर्ग का साहित्य भी समाज के एकांगी रूवरूप को प्रभावित करता हुआ अंतरसम्बधों को संक्षिप्त रूप में ही सही, पर बनाये रखता है।

धर्म, अध्यात्म, दर्शन जैसे गूढ़ विषय भी समाज के लिए ही होते हैं, और उनका प्रस्तोता साहित्य, सृजक समाज का ही एक अंग होता है। समाज एवं सृष्टि में व्याप्त उद्धरणों, घटित घटनाओं के माध्यम से गूढ विषयों को भी साहित्यकार व्याख्यायित करने में सफल हो जाता है। जीव जैसे सूक्ष्म एवं शरीर जैसे स्थूल विषय को भी व्याख्याकार समाज के दैनिक व्यवहार गत, परिवर्तन के माध्यम से व्यक्त कर देता है। संस्कृत साहित्य के नाटकों में समाज के कई रूप देखने को मिलते है। महाभारत में घात प्रतिघात, छद्म युद्ध से लेकर तार तार होती मर्यादाओं के दृश्य तत्कालीन समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं, वहीं रामायण में उच्च आदर्शों की पराकाष्ठा, त्याग एवं ममता का जीवंत रूप देखने को मिलता है। साहित्य एवं समाज के अंतरसंबधों के इससे बड़े उदाहरण और क्या हो सकते हैं ? इसी प्रकार हिन्दी साहित्य का भक्ति काल सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रसखान, दादू, रैदास आदि कवियों की भक्तिमयी रचनाओं के माध्यम से आस्था, त्याग, समर्पण, विश्वास, निर्गुण, सगुण, आदि समाज के विभिन्न स्वरूपों को व्याख्यायित करता हुआ मुगलों से संत्रस्त समाज में नई आशा का संचार करता रहा। अतः समाज से सरोकार रखने वाले भक्तिकालीन सारे सन्त कवि अपने साहित्य में समाज के अंतरसम्बंध को बनाकर रचनाएँ करते रहे।

प्रत्येक युग का साहित्य अपने परिवेश के प्रति प्रासंगिक होता है। परन्तु समय के साथ धीरे धीरे सामाजिक कलेवर बदलते ही उस युग के साहित्य की प्रासंगिकता शिथिल पड़ने लगती है। ऐसे में भी कुछ सामाजिक विषय सदा ही प्रासंगिक बने रहते हैं जैसे कि अमीर–गरीब की विषमता एवं समर्थवान की सार्थकता। साहित्य का विषय समाज एवं व्यवस्था दोनों होते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक विद्रूपता एवं राजनैतिक अव्यवस्था के कारण आज समाज एवं साहित्य दोनों का ढाँचा चरमरा रहा है। भौतिकवादी जीवनशैली के कारण आज भावनाएँ खंडित हो रही हैं और परिवार बिखर रहे हैं। भारत दादी माँ, बूढ़ी काकी एवं बड़ी बहू का देश रहा हैं। देशकाल एवं परिस्थितियों के इन्हीं विषयों को अपने साहित्य में जीवंत करके प्रेमचंद भारतीय कथा साहित्य के सम्राट बन गये परन्तु वर्तमान युग में पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों का संकुचन साहित्य की अवधारणा में भावात्मक संबंधों को उकेरने में गतिरोध उत्पन्न कर रहा है। आज बच्चे के माता पिता अपनी माता पिता की इकलौती संतान होने के कारण अपने इकलौते बच्चे को ताऊ–ताई, चाचा–चाची, मौसा–मौसी एवं भाई –बहन के रिश्ते का बोध नहीं करा सकते। ऐसे टूटते रिश्तों के बीच साहित्य का सामाजिक सरोकार भी एकांगी होकर बौद्धिकता का बोध कराने में व्यस्त हो गया, भावना को उसने तलाक दे दिया।

वर्तमान भौतिकवादी तकनीकी युग में भावबोध एवं आत्मबोध साहित्य में विसर्जित हो गये, परम्परागत सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतीक विलुप्त से हो गये। नूतन संचारक्रांति के कारण साहित्य में संदेश वाहक भ्रमर, कौवे एवं मेघ अप्रासंगिक लगने लगे। अब कालिदास का यक्ष आषाढ़ के मेघों को देखकर प्रणय में बेसुध नहीं होता, बल्कि वर्षा के सुहाने मौसम का आभास कर पिकनिक की योजना बनाता है, प्रेयसी के पास मेघ नही एसएमएस भेजता है, जिसमें भाव नहीं बल्कि एक निर्जीव संदेश है। आज के आधुनिक भौतिकवादी उपन्यासों की नायिका दुष्यंत की प्रेयसी शकुंतला के स्थान पर अब गर्ल फ्रेंड की भूमिका में दिखायी पड़ रही है। सीता का पत्नी त्याग (पतिव्रत धर्म) लिविंग रिलेशनशिप में खो गया। सूर की गोपियाँ बार बालाएँ हो गयीं। राणा प्रताप की गजभर की छाती, गजभर का भाला ओर उनकी देशभक्ति एवं हल्दीघाटी का रणक्षेत्र अब साहित्य में अप्रासंगिक हो गये। आज के तकनीकी युग में कविताओं में भी लम्बी दूरी तक मार करने वाली मिसाइले योद्धा हैं व्यक्ति नहीं। मानवीय बस्ती, औद्योगिक क्षेत्र मानवता के विकास के द्योतक स्कूल अस्पताल एवं अन्य संस्थान रण क्षेत्र है जहाँ वीरता एवं वीरगति को नही बल्कि मिसाइल की गति और विध्वंस की व्याख्या होती है। इन विषयों को प्रसंगवश साहित्य में वर्णित करने वाले साहित्यकारों का सामाजिक सरोकार विचारणीय है।

भौतिकवादी आज की बाजारू संस्कृति में साहित्यकार एवं साहित्यिक संस्थान दोनों लाभ के गणित से साहित्य सृजन एवं प्रकाशन की बात करते हैं। लगता है साहित्य का सरोकार वर्तमान में बाजारवाद एवं भूमंडलीकरण के कारण अपने को आर्थिक सरोकार तक सीमित कर लेता है। आज स्वार्थी मनोवृत्ति ने त्याग की परिभाषा बदल डाली, दायित्व को व्यवसाय के दायरे में खड़ा कर दिया है। इन्हीं सब के चलते सामाजिक ढाँचा चरमरा रहा है और ढहते ढाँचे में अपने कर्तव्य एवं संस्कृति से विमुख होकर साहित्यकार भी दायित्वविहीन सा लाभकारी योजनाओं के अनुरूप सृजन को प्राथमिकता दे रहा है। योजनाबद्ध रचित साहित्य में आत्मबोध एवं भावबोध का कोई स्थान नहीं होता। साहित्यकार तुफैल चतुर्वेदी की पीड़ा इस संदर्भ में उचित प्रतीत होती है कि ''साहित्य स्व के विस्तार की प्रकिया की जगह कुछ तयशुदा फ्रेमों में विचार ठूंसने का नाम हो गया है। प्रतिष्ठा, धन पाने के लिए रोमांटिक मुखौटा लगाये हथौड़ाधारी हत्यारी विचारधारा का पोषण साहित्यकारों का एक उद्देश्य बन गया। साहित्य में पाठक अपने आप नहीं लौटेंगे इसके लिए साहित्य की दिशा तय करने वाले, साहित्य पर कब्जा जमाये लोगों की सफाई आवश्यक है। यह कूड़ा विश्वविद्यालयों, अकादमियों, संस्थानों, पत्रिकाओं में बुहारी लगाये बिना बाहर नहीं जाने वाला। आज आवश्यकता हाथ में कलम के साथ साथ बुहारी उठा लेने की है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. पांचजन्य– स्वतंत्रता दिवस विशेषांक 18 अगस्त 201 3 पृष्ठ 69–70
2. संस्कृत साहित्य की रूपरेखाः डॉ.शान्ति कुमार नानूराम व्यास।

आदिवासी भाषा, संस्कृति तथा विकास की चुनौतियां

पुनीता जैन

भाषा में लोक की ज्ञान–संपदा, संस्कृति, कला–शिल्प, गीत, संगीत, साहित्य तथा मानव विकास के चरण व उनका अनुभवसंसार स्वाभाविक रूप से संचित होता है। इसलिए किसी भी विशिष्ट समाज की मातृभाषा उसके लोकमानस में मौलिक दृष्टि और समझ विकसित करने में सर्वाधिक सहयोग करती है। उत्तर आधुनिक काल में विविध वैमर्शिक आंदोलनों ने हाशिए के लोगों में उस चेतना का बीजारोपण किया, जिससे वे अपनी अस्मिता की रक्षा के साथ सम्मानजनक उपस्थिति दर्ज करा सकें। स्त्री, दलित, आदिवासी, तृतीय लिंगी समुदायों की उपस्थिति को इसी दृष्टि ने अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया । किन्तु इन वंचित वर्गों में आदिवासी समुदायों की सर्वथा भिन्न पहचान रही है। उनका जीवन–दर्शन, संस्कृति, पुरखा साहित्य कथित मुख्यधारा से अलग विचार को पोषित करता है। सृष्टि व प्रकृति के साथ सहजीविता का विचार अर्थात् मानव अस्तित्व के साथ जीव–जंतु, पहाड़, नदियों, जल, जंगल, जमीन के स्वाभाविक सहअस्तित्व को केन्द्र में रखकर विकसित जीवन–शैली का अनुकरण करने वाले आदिवासी समूह वस्तुतः एक अत्यंत उदार और व्यापक विचार दृष्टि को अपनाते हैं। जो आदिवासी समूह स्वाभाविक रूप से जंगल और प्रकृति के सान्निध्य में जीवनयापन करते हुए पर्यावरण के अद्वितीय संरक्षक के रूप में सम्मुख आते हैं, उन्हें कथित मुख्यधारा द्वारा स्थापित जीवन–व्यवस्था में प्रवृत्त करने को ही उनका विकास मान लिया जाना विचारणीय है।

आदिवासी समुदाय का प्रकृति, जीवन विषयक परंपरागत ज्ञान व पुरखा साहित्य उनकी मूल भाषाओं में संचित है। किन्तु मुद्रण, टंकण की समस्या, रोजगार का अभाव, सरकारी संरक्षण की उदासीनता जैसे कई कारणों से भारत की आदिवासी भाषाएं विलुप्ति के संकट का सामना कर रही है।'' औपनिवेशिक समय में अंग्रेजी और स्वतंत्रता के बाद हिंदी इन दोनों ही भाषाओं का रिश्ता आदिवासी समाज के साथ सम्मानजनक और न्याय पूर्ण नहीं रहा है। इन भाषाओं के जरिए एक ऐसी राजनीति और संस्कृति हम पर हमलावर रही है। जिसके चलते आज देश की 198 भाषाएं जिनमें से अधिकांश आदिवासी भाषाएं है, खत्म हो जाने के कगार पर पहुँच गई हैं। इनमें से सात झारखंड की आदिवासी भाषाएं हैं– हो, खड़िया, कुडुख, मुंडारी, मलतो, बिरहोरी और असुरी । यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हैं कि भारतीय संविधान जहां आदिवासी अस्मिता, स्वशासन, रीति–रिवाज, भाषा, संस्कृति की रक्षा के लिए संकल्पबद्ध है वहीं हमारे राज्य और देश नहीं।'' 1 यहां स्थापित विचार है कि मातृभाषा में शिक्षा व्यक्ति के स्वाभाविक विकास का प्रथम चरण है। मध्यप्रदेश में अत्यंत पिछड़े सहरिया आदिवासी समुदाय को विलुप्ति के संकट से बचाने तथा उन्हें शिक्षित करने का जब प्रयास किया गया तो यह देखने में आया कि उनके बच्चे हिंदी में दी जाने वाली शिक्षा से स्वयं को जोड़ नहीं पा रहे हैं। किन्तु जैसे ही उनकी मूल भाषा में अध्यापन की व्यवस्था की गई, वे शिक्षा के साथ धीरे–धीरे जुड़ने लगे। यह छोटा सा उदाहरण दर्शाता है कि मातृभाषा से जुड़ाव एक बालक को शिक्षा देने का सबसे सहज माध्यम बन सकता है।

आदिवासी भाषाओं का संरक्षण उनके संचित ज्ञान और संस्कृति के संरक्षण तथा स्वाभाविक विकास की नींव तैयार करता है। आदिवासी समुदाय को उनकी जीवनचर्या और विचार से विच्छिन्न करके यदि मुख्यधारा के भौतिक विकास को ही उनका विकास मान लिया जाए तो यह कई तरह के प्रश्नचिह्न खड़े करता है। यह ध्यान रखना होगा कि संताली को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करने से इसका लाभ संताली समाज को मिला है। झारखण्ड में राज भाषा का दर्जा प्राप्त 8 भाषाओं मुंडारी, हो, खड़िया, कुडुख, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुरमाली में प्राथमिक शिक्षा दिए जाने का निर्णय वहां के आदिवासी समुदाय को आगे ले जाने का महत्वपूर्ण कदम है।[2] आज झारखंड के कई आदिवासी रचनाकार अपनी मूल भाषा के साथ हिन्दी में भी कहानी, उपन्यास और कविताएं लिखकर अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। यह स्थिति मध्यप्रदेश की आदिवासी भाषाओं से कहीं बेहतर है। यह भी देखा गया है कि मध्यप्रदेश की आदिवासी भाषा और पुरखा–साहित्य पर कथित मुख्यधारा की संस्कृति का प्रभाव पड़ने से उन आदिवासी भाषाओं के स्वतंत्र वैशिष्ट्य पर प्रभाव पड़ा है। आदिवासी समाज की शिक्षा में उनकी भाषा के साथ उनके सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को

सम्मिलित करने से उत्पन्न जुड़ाव उन्हें शिक्षा की ओर आकर्षित करने में सक्षम और उनके सर्वांगीण विकास की राह प्रशस्त करने में सहायक है।

वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था और लादी गई भाषा से आदिवासी समुदाय का समुचित विकास संभव नहीं है। यह स्थिति हिंदी और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विषय में भी विचारणीय है। एक तरफ मातृभाषाओं की नाकाबिलियत का सतत् अहसास और दूसरी ओर शिक्षा के माध्यम के रूप में पराई भाषा के व्यवहार ने हमें एक अजब तरीके से दुविधाग्रस्त बना दिया । यह दुविधाग्रस्तता हमारी शिक्षा व्यवस्था को खोखला करती जा रही है। देशज भाषाओं में मौजूद पारंपरिक ज्ञान की अवहेलना और मौलिक ज्ञन के सृजन में विफलता के नाते शिक्षा प्रणाली लगातार प्रश्नांकित हुई।[3] जिस शिक्षा व्यवस्था पर मौलिक दृष्टि मूल्य संवर्धन और रोजगार संबंधी कई सवाल उठाए जा रहे हो उसको आदिवासी पर लादना उन्हें सांस्कृतिक दृष्टि से विपन्न करना है। आदिवासी समुदाय के लिए उनकी मातृभाषा में शिक्षा के पक्ष में यह विचार भी उल्लेखनीय है ...'' (यहाँ) भाषायी स्तर पर पूरी सोच का अंतर है। ऐसे हमारी मुख्यधारा की भाषाएं कहीं दलित बन जाती है तो कहीं सवर्ण ! कहीं सर्वहारा है तो कहीं कारपोरेट जगत की उद्घोषक। दरअसल यह भाषाएं वर्चस्ववादी प्रवृत्ति की पोषक हैं और उपनिवेशवाद का हथियार भी हैं । अंग्रेजी विदेशी उपनिवेशवाद का हथियार है तो हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएं आदिवासी क्षेत्रों के आंतरिक उपनिवेशवाद का औजार है। इसलिए उनमें शासन सत्ता की गंध भरी है भाईचारे की महक कम है।''[4]

यह विचारणीय है कि विकास की जिस अवधारणा को कथित मुख्यधारा ने आत्मसात् किया है क्या वह वास्तव में समूची सृष्टि और प्राणिजगत के लिए हितकारी है! इस पर विचार किए बिना सह–अस्तित्व और सहजीवी दर्शन को जीने वाले आदिवासी समुदायों को ठेलकर इस ओर लाना कहां तक औचित्यपूर्ण है। क्या कभी किसी आदिवासी से पूछा गया है कि वह क्या चाहता है! या वर्चस्ववाद की मनोवृत्ति के श्रेष्ठताबोध ने स्वयं ही यह तय कर लिया है कि वह श्रेष्ठता अंतिम विचार है और हाशिए के समाज को उसमें सम्मिलित करके वह अपनी उदारता और संवेदनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। 2010 के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखक 'मारियो वार्गास ल्योसा' के उपन्यास 'एल आब्लादोर' (हिंदी अनुवाद–किस्सागो) का यह संवाद कई प्रश्न उत्पन्न करता है–'' क्या हमारी कारें, बंदूके, जहाज और कोकाकोला हमें अधिकार देते हैं कि हम उन्हें खत्म कर डालें क्योंकि उनके पास ये तमाम वस्तुएं नहीं है या कि तुम 'जंगलियों को सभ्य बनाने में विश्वास करते हो, दोस्त ? कैसे ? उन्हें सैनिक बनाकर? या उन्हें फिदल परेरा की तरह क्रिओल के खेतों में बंधुआ मजदूर बनाकर ? उन्हें अपनी भाषा, धर्म, रीति–रिवाज बदलने को मजबूर करके जैसा कि मिशनरी करने की कोशिश कर रहे हैं? इस सब से क्या मिलेगा? सिर्फ इतना ही ना कि हम उनका दोहन आसानी से कर सकेंगे। ऐसा करके हम उन्हें मानव जाति के चलते फिरते विद्रूप में बदल देंगे।'[5] यह उपन्यास आदिवासी संस्कृति के उस सार्वभौमिक वैशिष्ट्य को भी रेखांकित करता है जिस को आधार बनाकर उनके प्रति विचार दृष्टि को नियत किए जाने की जरूरत है।''... उनकी जीवन चर्या को कौन सी चीज संतुलित करती थी– प्रकृति के प्रति एक ऐसी दृष्टि, जो उसे इन संस्कृतियों का एक अद्वितीय गुण लगता था । यह एक ऐसी चीज थी जो सभी आदिवासियों में तमाम विभिन्नताओं के बावजूद समान रूप से पायी जाती थी। उस दुनिया की गहरी समझ, जिसमें वे आद्योपांत डूबे थे, एक ऐसी समझ जो अनंत काल से चले आ रहे रिवाजों, संस्कारों, निषेधों, भय, नित्य कर्मों के गझिन जाल के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई थी। .... ये आदिवासी आज तक इसलिए बचे हुए हैं क्योंकि उन्होंने अपनी आदतों, रीति रिवाजों को प्रकृति की लय के साथ एकात्म कर लिया हैं,उसके प्रति बिना हिंसा किए, उसमें बिना कोई विचलन पैदा किए, उसे जीवित रहने के लिए जो कम से कम जरूरी है उतना भर लेकर ताकि पलटकर वह उन्हें ही नष्ट न कर डाले उससे बिल्कुल उलट जो आज हम सब लोग कर रहे हैं, उन तत्वों को आमूलचूल नष्ट करते हुए जिनके बिना हम वैसे ही नष्ट हो जाएंगे जैसे बिना पानी के फूल सूख जाता है।''[6] निश्चित ही उक्त पंक्तियां स्पष्ट करती हैं कि आदिवासी समुदाय की शिक्षा का विचार उनकी भाषा में, उनकी सहभागिता और विचारों को प्राथमिकता देकर ही उनके अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा हो सकती है। जबकि हमारी विकास की अवधारणाओं के निर्माण में उनकी उपस्थिति व विचार, दर्शन को महत्त्व देने की प्रवृत्ति न्यूनतम है।

आदिवासी संस्कृति, गीत, संगीत, नृत्य व वेशभूषा को बाजारवाद ने प्रदर्शन की वस्तु बना दिया है। आदिवासी संस्कृति व कला के नाम पर उनके भौतिक प्रदर्शन से इस संस्कृति को क्या उपलब्ध हुआ है, यह भी बड़ा प्रश्न है। हांसदा सौभेंद्र शेखर की कहानी 'आदिवासी नहीं नाचेंगे' का एक पात्र मंगल मुर्मू विशिष्ट आयोजन में नृत्य के लिए इंकार करते हुए कहता है–'' मैंने सिर्फ इतना कहा, हम आदिवासी अब और नहीं नाचेंगे – इसमें क्या गलत है ? हम खिलौनों की तरह है– कोई हमारा ऑन का बटन दबाता है या पीछे की चाबी घुमाता है और हम संताल हमारे टामाक और तुमदाक पर संगीत बजाने लगते हैं या हमारे तिरियों पर धुन बजाने लगते हैं जबकि कोई हमारे नाचने की जमीन ही छीन लेता है । मुझे बताएं क्या मैं गलत हूँ ?''[7] उपर्युक्त पंक्तियां एक आदिवासी समुदाय के जल, जंगल, जमीन से विस्थापन, सांस्कृतिक उच्छेदन, प्रदर्शन की वस्तु बन जाने की पीड़ा का बयान है। ऐसे बयान उनके लिए बनाई जाने वाली तमाम नीतियों के निर्माण में आधारभूत विचार के रूप में प्रयुक्त किए जाने की जरूरत है। आदिवासी कला, शिल्प, संगीत, गीत, नृत्य को प्रदर्शन मात्र की वस्तु बना दिए जाने की पीड़ा के पीछे उनके गंभीर तर्क भी हैं – ''हमारे सारे सर्टिफिकेट और शील्ड, उन्होंने हमें क्या दिया ? दिकू बच्चे स्कूल और कॉलेज जाते, शिक्षा और नौकरी पाते हैं। हम संतालों को क्या मिलता है ? हम संताल गा सकते हैं, नाच सकते हैं और हम अपनी कला में अच्छे हैं। फिर भी हमारी कला ने हमें क्या दिया है ? विस्थापन, तपेदिक।''[8] वस्तुतःकथित मुख्य धारा द्वारा आदिवासी कला का दोहन उन्हें पीड़ा पहुंचाता है। आदिवासी समुदाय अपनी संस्कृति, भाषा, कला के प्रति समर्पित रहते हैं उदाहरण के लिए, पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासी समूह सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा हेतु सदैव सजग रहे हैं। उनके विविध प्रदर्शनों में सांस्कृतिक गीत, संगीत और वाद्य यंत्रों का सार्थक प्रयोग और उनकी प्रतिरोध की संयमित शैली इस सांस्कृतिक विरासत का सुंदर नमूना प्रदर्शित करती है। अतः आदिवासी शिक्षा तथा विकास के विचार में उनकी संस्कृति, दर्शन, भाषा को आधार बनाए जाने की आवश्यकता स्पष्ट है। इसकी जरूरत इसलिए भी है क्योंकि कथित स्थापित सभ्य समाज के इनके प्रति गहरे पूर्वग्रह है। भारतीय समाज के मध्य वर्ग के मानस में बैठी छवि से इसे समझा जा सकता है।

आदिवासी समाज में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त उपभोक्तावादी प्रवृत्ति नहीं है। इसलिए विकास के स्थापित मानदंडों के बीच आदिवासी संस्कृति, मनोविज्ञान को समझने की जरूरत है। उनके पास सुदृढ़ सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक व्यवस्था रही है तथा उनका धार्मिक ढांचा सर्वथा भिन्न प्रकृति पर आधारित है। बाह्य हस्तक्षेप ने उनकी समूची जीवन–व्यवस्था को प्रभावित या खंडित किया है। अतः आदिवासी समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक संरचना और मान्यताओं के गहन विश्लेषण व आदिवासी सहभागिता के साथ ही उनके जीवन में बदलाव तय किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. आदिवासी साहित्य विमर्श–गंगा सहाय मीणा, (लेख–भाषा, साहित्य और आदिवासी स्त्रियाँ–वंदना टेटे) अनामिका पब्लिशर्स पृष्ठ 193–194
2. आदिवासी भाषा और शिक्षा–रमणिका गुप्ता, स्वराज प्रकाशन, पृष्ठ 14–15
3. मातृभाषा की नागरिकता जरूरी है – सदानंद शाही, जनसत्ता, 23 फरवरी, 20 20 पृष्ठ 7
4. आदिवासी भाषा और शिक्षा–रमणिका गुप्ता, पृष्ठ 8–9
5. किस्सागो – मारियो वार्गास ल्योसा, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 36
6. वही, पृष्ठ– 36–37
7. आदिवासी नहीं नाचेंगे – हांसदा सौभेन्द्र शेखर, राजपाल एण्ड संस, पृष्ठ 1 72,
8. वही पृष्ठ 1 78–179

मन की खिड़की

डॉ. सुषमा जादौन
प्राध्यापक हिंदी

मन की खिड़की से झाँक के देखो,
धूप आँगन में खिलने लगी है
लेके इक दूसरे का सहारा,
साथ अच्छाई चलने लगी है।

अब उदासी के तालों को खोलो,
और सुनो पहली बारिश की सरगम
लेके आयेंगे हम सब, उजाले
भूल जायेंगे पिछले सभी गम

सुबह ओस ने गीत सुनाया,
उम्र पीड़ा की ढलने लगी है
मन की खिड़की से झाँक के देखो,
धूप आँगन में खिलने लगी है

जो कसे तार वीणा के कबसे,
अब इन्हें खोल दो, बोल दो
तुम गीत गाओ खुशी के दोबारा
द्वार सपनों के अब खोल दो तुम

जीत होगी सदा ही हमारी,
रोशनी मन में जलने लगी है
मन की खिड़की से झाँक के देखो,
धूप आँगन में खिलने लगी है

अब ये तूफान फिर से न आए,
ऐसा संकल्प हम मन में कर लें
कैसे टिकना है पर आंधियों में
मंत्र जीवन–समर्पण के भर लें

अब छंटेंगे ये बादल घनेरे,
आस पलकों पे पलने लगी है
मन की खिड़की से झाँक के देखो,
धूप आँगन में खिलने लगी है

The Secret of Success

Dr. Ila Rani Shrivastava
Head of the English Department

When you want to succeed, be ready to pay price for it which includes braving failures and setbacks and keep persistent with your efforts till the goal is achieved. We all human beings are same in one or the other way. But see the difference in many ways. We may not be the creator of our own destiny but at least we can manipulate it with our skills. In this age of globlisation what type of skills the students, require to get employed early? The most important is the communication skills, followed by soft skills, leadership qualities, emotional stability and presentation skills which include verbal (how we speak) and physical (how we look) presentation skills. Communication skills is the set of skills which helps us to exchange our ideas with other without any confusion in English as English language is the most required language at present.

Presentation skills: It consists of two things, verbal and physical presentation skills. It is crucial to know about what to speak, where to speak and most important how to speak (voice modulation). These are verbal presentation skills and the second is physical appearance ie how we dress up in public, what colour we choose for our clothing our hair style, dressing and other accessories we carry but requires much more focus is social etiquette which comprises of our table manners, body language and personal hygene.

Technical skills: A part from above two skills and the subject knowledge, one has to be good enough in technical skills too. In this fast growing world one should be updated with latest technology trends. Means one should be aware of various operating systems on a computer. This is the era of globalization. Fastly growing competition makes it mandatory to be updated in all respect.

Soft skills: Now last but not the least is soft skills, life is a throughout learning process and soft skills are the skills which we learn from our life. Things like empathy, helping others, concern for the growth of you company. Sense of responsibilities comes under this which is inherent in everyone. The only thing to bring it into light.

Positive Thinking - A Need of an Hour

Mrs. Shalini Tiwari
Asstt. Prof English

Positive thinking implies seeing the world through rose – colored lenses ignoring or glossing over the negative aspects of life, it actually means approaching life's challenges with a positive outlooks. Positive thinking plays an important role in positive Psychology, a subfield devoted to the study of what makes people happy and fulfilled. Positive thinking can aid in Stress management and even plays an important role in your overall health and wellbeing. Positive thinking does not necessarily means avoiding or ignoring the bad things (negativity), instead, it involves making the most of the potentially bad situations, trying to see the best in other people and viewing yourself and your abilities in a positive light.

Some researchers frame positive thinking in terms of explanatory style that is, your explanatory style is how you explain why events happened People with an optimistic explanatory style tend to give themselves credit when good things happen, but typically blame outside forces for bad outcomes. In recent years, so called "Power of positive thinking" has gained a great deal of attention, thanks to self-help books, (1) The secret, (2) Positive living-Vera Peiffer and there are lots of books written on this topic.

There are many very real health benefits linked to positive thinking and optimistic attitudes -

1) Better stress management and coping skills
2) Enchanced Psychological health
3) Greater resistance to the common cold
4) Increase Physical well-being
5) Longer life span
6) Lower rate of depression
7) Reduced risk of cardiovascular disease-related death.

Positive thinking have such a strong impact on physical and mental health, is that people who think positively tend to be less affected by stress, another possibility is that people who think positively tend to live healthier lives in general, they may exercise more, follow a more nutritious diet and avoid unhealthy behavior.

Both the terms, Positive, thinking" and "Positive Psychology" are two interchangeable terms. Positive thinking is about looking at things from positive point of view where as positive psychology certainly tends to focus on optimism, there are actually times when more realistic thinking is more advantageous, on the other hand, in some cases, optimistic thinking can improve physical health, when you are experiencing positive emotions like joy, contentment and love, you will see more possibilities in your life.

(1) **Meditation –** people who meditated daily continue to display increased mindfulness, purpose is life, social support and deceased illness symptoms.

(2) **Writing –** Writing also play an important role in positive thinking writing about various experience of life's ups and downs, about goals of life, this increase positive experiences had better mood level and enjoyed better health.

(3) **Play -** Give your self permission to smile and enjoy the benefits of positive emotions, schedule your positive emotions, schedule your time for playing games and adventure so that can experience contentment and joy and to explore and build new skill.

There is no doubt that happiness is the result of achievement "Happiness is both the precursor to success and the result of it. When they are happy, they develop new skills those skill leads to new success which result in more happiness, to put it simply seek joy, play after and pursue adventure, your brain will do the rest. These are few proven benefits of positive thinking or thinking positively.

(1) Better quality of life
(2) Higher energy level
(3) Better psychological and physical health

(4) Faster recovery from injury or illness

(5) Fewer cold

(6) Lower rates of Depression

(7) Better stress management and coping skills

(8) Longer life span.

Start off, your each day with some thing up lifting and positive approach Like tell your self that it's going to be a great day listen to a happy and positive songs or play list. Share some positivity by giving compliment or doing some thing nice to some one Shifting your inner dialogue from negative to positive can boost your mental health and people with positive self talk may have mental skill that allow them to solve problems, think differently and to be more efficient at coping with hardship or challenges, this can reduce the harmful effects of stress and anxiety.

"Food for Thought "

Dr. Seema Shrivastava
Professor and Head
Economics Department

- A smile is a curve that sets everything straight.
- No Pain No Gain.
- Plan your work and work your plan.
- Do important jobs now, till they become urgent.
- Winners don't do different things, they do things differently.
- Opportunities are never lost, somebody else takes them.
- Failed to prepare, prepare to fail.
- Luck favours those who are prepared.
- There is never a wrong time to do right things.
- Smile: It is tax free, it improves your face value.
- For one minute of anger you lose one hour of joy.
- Common sense is not so common.
- Action speaks louder than Words.
- Team: Together Everyone Achieves More.
- House is built by hands, home is built by hearts.
- Think twice.
- Tough times do not last; but tough people do.

कौन है वह !

श्रीमती डॉली खटवानी
प्रयोगशाला तकनीशियन

हर पल बदले इतना अस्थिर
कहीं भी ना टिके
कुछ ही क्षणों मे मीलों की यात्रा कर आए
हवा से भी हल्का
जब भारी हो जाए तो उठाए न उठे
उड़े तो आसमानों की ऊंचाई भी कम है
डूबे तो पाताल की गहराई भी कम है
कभी बहुत ताकतवर
और कभी एकदम कमजोर
छोटे बच्चों से भी अधिक चंचल
बड़े बड़ों से गम्भीर
कभी छोटा कभी बड़ा
कभी हल्का कभी भारी
मित्र बनें तो हितैषी
शत्रु बनें तो अहित करे
अपने मालिक पर राज करे
कभी नचाए मदारी जैसे
इसे नचाना बड़ा मुश्किल
इसे जीतना बहुत मुश्किल
इसे जीता तो जीत पक्की
इसे हारे तो हार पक्की
जो इसे जीता वह मनजीत
कौन है वह
ये है हमारा मन

Concrete Boundaries Around Trees Uprooting The City's Green Cover?

Monika Singh

Trees are of invaluable importance to our environment and to human well being. Planting a tree is one of the easiest ways to improve the environment and beautify our surroundings. In our attempt to beautify, the city we built a cement bridge around the tree's roots. Concrete boundaries around trees are weakening the roots and eventually killing trees, according to experts and environmental lovers.

The tree's fell because when the authorities built a cement bridge around this tree, the girth of the tree was less, over time it grew in circumference, the hole in the cement remained the same. The roots are spread as far apart as the branches of a tree. Even large trees can withstand storms if the roots are protected. But if this area becomes weak, the tree is in danger. Cement Bridge did not allow the roots of the tree to grow causing it to fall. We all aware about the importance of large trees, for no matter how old a tree is, it has the ability to digest carbon dioxide which is very important today. The authorities are spending a lot of money on paver blocks, and cement footpaths, but they need to understand that the trees require at least one metre of open ground around its roots. If it is completely cemented how will it get oxygen and water? If bricks or mortar are used instead of cement, root growth is not stunted and their risk to the plant is reduced. We have to understand that areas around the trees should be left alone and that paver blocks and concrete boundaries limit the oxygen supply to the roots of the trees thus making them weak.

भारत में लिंग विभेदीकरण का स्वरूप

डॉ. अर्चना शर्मा
सह. प्राध्यापक समाजशास्त्र

सामाजिक, सांस्कृतिक, रूढ़िगत परम्पराओं की मौजूदगी में महिलाओं को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक असमानताओं के बोझ से लाद दिया जाता है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक मुद्दों पर उनका पग पग पर शोषण होता है। महिला भी मानव है यह तथ्य अब तक खुले मन से स्वीकारा नहीं जाता है। संभवतया इसलिए उसको मानव की श्रेणी से निचले स्तर का दर्जा देकर जब तब तरह तरह से नोंचा, खरोंचा, कुचला जाता है तमाम आरोपों, प्रत्यारोपण एवं अयोग्यताओं के ताज सिर पर संजोये जाते हैं क्योंकि वह महिला है। विधाताकृत इस जीवन को अनंत प्रकार से उत्पीड़ित किया जाता है उसका दोष सिर्फ इतना है कि उसने 'स्त्री' के रूप में जन्म लिया ।

वैश्वीकरण के इस दौर में भी पुत्र पुत्री के मध्य असमानता की चिर परिचित मौजूदगी होना जारी है। पारिवारिक संरचना में बेटे का महत्व आज भी है। ऐसा माना जाता है कि पुत्र ही वंश को आगे बढ़ता है मरने पर चिता को अग्नि पुत्र के द्वारा ही दी जाएगी । श्राद्ध पक्ष में पानी भी पुत्र ही देगा, और तभी मोक्ष की प्राप्त होगी। मनुवादी यह धारणा आज 21 वीं शताब्दी के आधुनिक समाज में गहरी जड़ें जमाए हुए है। अतः महिलाओं का यह परम कर्तव्य हैं कि वे पुत्र को जन्म दें। जो महिलाएँ लड़के पैदा नहीं कर पाती है, उनकी दुर्गति लगभग तय रहती है। उसे बेटा नहीं होने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है । यह सिलसिला अमीरी, गरीबी ,शिक्षित, अशिक्षित, शहरी , ग्रामीण, परम्परागत आधुनिक भेद को नहीं मानते है । वे परिवार जो शासकीय कानूनी या राष्ट्रीय नीति से बंधे हैं। वे बड़े भारी मन से स्त्री–पुरूष, समानता की बात करते हैं, क्योंकि वे भी बेटे की चाह मन में दबाए फिरते हैं।

भ्रूण हत्या विज्ञान और तकनीकी विकास का दुरूपयोग करते हुए मानव ने मानव को ही जन्म से पहले कोख में ही मार डालने का तरीका खोज निकाला है। बिहार व राजस्थान जैसे राज्यों में यह समस्या विकट रूप धारण करती जा रही है। यही कारण है कि समाज में स्त्री पुरूष के मध्य लिंग अनुपात घटने लगा है। तमाम विधि–विधान यहाँ आकर बौने

नजर आने लगते हैं। इसी प्रकार बालिका हत्या, बाल वेश्यावृत्ति, यौन शोषण जैसे घिनौने कार्य हो रहे है। आज मानव जाति को सर्वाधिक खतरा मानव से ही है। वास्तविकता के धरातल पर साँस तोड़ती ये मानवकृत परम्पराएं मानवाधिकारों को धिक्कारती है चीखती है, इंसाफ के लिए और मानवाधिकार की दुहाई देने वाले तमाम कानून अपनी मूक उपस्थिति के लिए खून के आंसू रोते हैं। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते समस्त व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा का हक है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का चयन तथा उन्हें अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने का अधिकार है। मानवाधिकार के सार्वभौमिक घोषणा पत्र में प्रावधानिक अधिकार महिला पुरूष दोनों के लिए है। सृष्टि–सृजन व सामाजिक संरचना निर्माण में स्त्री पुरूष दोनों का समान योगदान है। वे एक दूसरे के पूरक है फिर विभेद क्यों ? हमारी पुरातनवादी सामाजिक, व्यवस्था में विभेदीकरण के बीज समाहित है। काम का बंटवारा' के सिद्धांत ने समाज को रूढिवादी बना दिया और महिलाओं को द्वितीय दर्जा दे दिया गया।

अरस्तु जैसे विद्वान महिलाओं को दास की श्रेणी में रखते है। मनु संहिता में महिला की पशु की कतार में खड़ा कर दिया गया। समूची सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संरचना में महिलाओं को आज भोग विलास का साधन व घर व सम्पत्ति की रखवाली करने वाली एक निरीह प्राणी माना गया। परम्परागत रूढ़िवादी सामाजिक विचारधारा की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि वर्तमान वैश्वीकरण के इस युग में भी हिलाए नहीं हिल रही। महिलाएं कितनी भी योग्य, बुद्धिमान या परिश्रमी हों, मूल्य दाल बराबर ही आंका जाता है।

आज भी लिंग विभेदीकरण की छत्रछाया तले महिलाएँ नारकीय जीवन भोग रही है। उनका अपनी आत्मा, शरीर, मन पर भी अधिकार नहीं है, विडम्बना देखिए, जिस बच्चे को एक महिला नौ महीने तक अपनी कोख में रखती है उस पर ही उसका अधिकार नहीं होता। उपेक्षा की शिकार बेटियों की शिक्षा–दीक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है इसलिए अनंत प्रयासों के बावजूद महिला साक्षरता में आशानुकूल वृद्धि नहीं हो पाती है।

वर्तमान मानवाधिकार जागरण के इस दौर में भी महिलाओं की स्थिति अब भी उस गेंद की भांति है जो एक जगह से दूसरी जगह उछाली जाती है। दोहरे सामाजिक मापदण्डों के बीच पिसती महिला एक ओर पूजनीय है, सृष्टि का आधार है तो दूसरी ओर भोग्या।

सामाजिक व्यवस्था की आड़ में महिलाओं को मानवाधिकारों से सरेआम वंचित किया जाता है और हम सब मूक दर्शक बने रह जाते हैं।

डॉ. लोहिया के अनुसार ऐसी स्थिति में पुरूषों तथा स्त्रियों को मिलाकर समता तथा समृद्धि पर आधारित नव–भारत का अभियान चलाना होगा, अन्यथा सशक्तीकरण का सपना बस एक सपना ही बना रहेगा। यह तभी होगा जब हम सब मिलकर आधी आबादी की दशा सुधारने का संकल्प लें और उसे कार्यान्वित करने का मन बनाएँ ।

संदर्भः

1. मानवाधिकार और महिलाएँ–डॉ.ममता चंद्रशेखर
2. भारत में सामाजिक परिवर्तन–डॉ.ओमप्रकाश जोशी

Role of Healthy Diet in Determining Moral Values

Dr. Meeta Badal
HOD (CND Deptt.)

Moral values are set of principles which help us evaluate what is good and what is bad. Moral values are a set of some precious values which help us in becoming a good human being. These values involve a lot of factors like morality, respecting others, helping others, loving others, etc. Food powers your life. It fuels all bodily processes that enable you to move, think and breathe.

Strength, agility, coordination, endurance, speed and level of performance are all powered by the food you eat. What you eat determines how you tackle your daily physical activities, including housework, your job, college, homework, shopping and exercise. Eating healthy enables body movements to be executed with ease. A poor diet with unhealthy food choices can make each movement a major effort filled with stress, strain and pain. If you prefer sugar laden simple carbohydrates to healthier whole grains, fruits and vegetables, you alternate between energy spikes and crashes. A diet filled with fried foods cooked in unhealthy saturated fats, trans fats and high fat increases your risk of major diseases that impair your physical wellbeing and threaten your life. Replace or limit foods containing unhealthy saturated fats and treat your body to the protective and restorative benefits of unsaturated fats found in vegetable oils, fish and nuts.

Food is the source of power for your brain as well as your body and has a direct relationship to mental and emotional health and stability. Learning and memory illnesses such as depression, schizophrenia, Alzheimer's disease and Parkinson's disease benefit from a healthy, reduced calorie diet that includes a variety of colorful fruits and vegetables and fish high in omega 3 fatty acids.

Eating a healthy diet keeps you physically and mentally fit. Unhealthy food choices lead to obesity and illness, prevent you from socializing with friends and family, zap your energy, leaving nothing for you to look forward to at the end of the day other than being at home, sprawled out on your couch. A healthy balanced diet prevents weight gain, lowers risk for diet related illnesses such as heart disease, diabetes, cancer and depression and gives you the energy to have a full and rewarding social life.

A balanced diet can have a positive impact on your life by leading to a more sustained elevated mood. A healthy lifestyle including a regular, healthy breakfast, balancing your lean protein consumption with whole grain carbohydrates, getting enough folate and omega 3 fatty acids and cutting back on alcohol and simple sugars has been linked to an improved mood and may even help alleviate depression. Carbohydrates allow the amino acid tryptophan to enter the brain where it produces serotonin, the mood enhancing neurotransmitter but whole grain carbohydrates produce a more lasting effect on mood while carbohydrates made with refined grains like white bread causes a quick crash.

There is no aspect of your life that is not influenced by what you eat. Fueling your body with processed food, fast food, sugar, fat and calorie dense food affects who you are, what you do and your ability to pursue your dreams and aspirations. The food we eat affects our mental status and therefore determines our behavior. Moral values are concerned with sound thinking and hence choice of food plays a vital role in one's behavior.

Eating healthy doesn't just directly impact your own life, it can help inspire those around you as well. When the people around you, be it friends or family are happy and positive, this contributes to a better quality of life for all. Hence, we can say that what we eat makes us who we are.

Contribution of Indian Mathematicians to Mathematics

Compiled by
Dr. Varsha Chauhan
Assistant Professor (Mathematics)

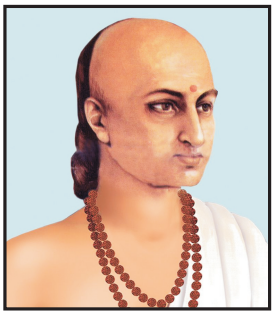

1. **Aryabhatta -** Aryabhatta was born in 476 A.D. in Kusumpur, India. He was the first person to say that Earth in spherical and it resolves around the Sun. His contribution to the mathematics is unmatched and can not be ignored, as he was the one who calculated the approximate value of pi, which he found it to be 3. 14. he has also given the area of triangle. In the field of algebra, he had provided various result for the summation of series of squares and the cubes.

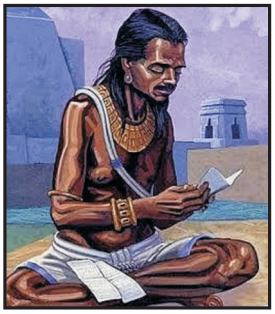

2. **Brahma Gupta –** Brahma Gupta was born in 628 A.D. He was the first mathematician who provided the formula for the area of a cyclic quadrilateral. His contributions to the geometry are significant. Brahmagupta's Brahmasputa Siddhanta was written in Bhinmal. Its 25 chapters contain several unprecedented mathematical results like role of zero, a method for computing square root, Brahmaguta's identity, Brahmagupta's theorem and many more.

3. **Ramanujan –** Ramanujan one of the elegant mathematicians of India was born on 22nd of Dec 1887 in a small village of Tajore district, Madras. He discovered the infinite series of pi in 1910. He had provided the solution of cubic equation in 1920. He did a lot of work in number theory. He discovered a new method called "circle method" which is useful in number theory. He also worked on partition of numbers, sum of squared, triangular number and gave Ramanujan's Tau function. Ramanujan's contributions stretch across mathematics fields including complex analysis, number theory, infinite series and continued function.

4. **Shakuntala Devi -** Shakuntala Devi was born on 4th Nov 1939 in Bangalore city of India. She was extremely talented in calculation. In Dallas at Sothern Methodist College, she calculated the 23rd cube root of 201 digit number in 50 seconds giving the answer 546,372,891 in comparison to a UNIVAC 1101 computer which took more time to around 12 more seconds to do the same calculation. At Imperial College London, 1980 she multiplied 7686369774870 and 2465099745779 calculating the 26 digit answer in 28 seconds. She holds Guinness Book of World Record for this fastest human computation. In the 1950s BBC giving her the title of Human-Computer. In her mathematical skills of Speed and Accuracy, she could beat the computers.

✠ महाविद्यालयीन परिवार

नाम	पदनाम	विषय
1.	डॉ. मथुरा प्रसाद	प्राचार्य
2.	डॉ. राजेश कुमार खजवानियां	प्राध्यापक वाणिज्य
3.	डॉ. संजय कुमार जैन	प्राध्यापक वाणिज्य
4.	श्री ए.के. महागाये	सह प्राध्यापक वाणिज्य
5.	डॉ. राजकुमार शर्मा	प्राध्यापक वाणिज्य
6.	श्रीमती चित्रा खरे	सहायक प्राध्यापक वाणिज्य
7.	डॉ. राजेन्द्र कुमार विजयवर्गीय	सह प्राध्यापक वाणिज्य
8.	डॉ. गरिमा जाउलकर	प्राध्यापक राजनीतिशास्त्र
9.	श्रीमती अनुपमा यादव	प्राध्यापक राजनीतिशास्त्र
10.	डॉ. विनीता विजयवर्गीय	प्राध्यापक अर्थशास्त्र
11.	डॉ. सीमा श्रीवास्तव	प्राध्यापक अर्थशास्त्र
12.	श्रीमती सीमा माथुर	प्राध्यापक अर्थशास्त्र
14.	श्रीमती प्रतिभा डेहरिया	सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र
15.	डॉ. अंशुबाला मिश्रा	प्राध्यापक हिन्दी
16.	डॉ. पुनीता जैन	प्राध्यापक हिन्दी
17.	डॉ. सुषमा जादौन	प्राध्यापक हिन्दी
18.	श्रीमती शालिनी तिवारी	सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी
19..	श्रीमती इलारानी श्रीवास्तव	सह प्राध्यापक अंग्रेजी
20.	डॉ. अर्चना जैन	सह प्राध्यापक गणित
21.	डॉ. वर्षा चौहान	सहायक प्राध्यापक गणित
22.	डॉ. उमेश कुमार साकल्ले	प्राध्यापक भौतिकशास्त्र
23.	श्रीमती प्रीति जौहरी	सहायक प्राध्यापक भौतिकशास्त्र
24.	डॉ. अंजना अग्रवाल	प्राध्यापक रसायनशास्त्र
25.	डॉ. नीलम चोपड़ा	प्राध्यापक रसायनशास्त्र
26.	डॉ. अर्चना शर्मा	प्राध्यापक समाजशास्त्र
27.	डॉ. संध्या सक्सेना	सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
28.	डॉ. गीता चौहान	सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
29.	डॉ. अनुराधा दुबे	प्राध्यापक वनस्पतिशास्त्र
30.	डॉ. शीला कुमार	सहा.प्रा. वनस्पतिशास्त्र
31.	डॉ.कीर्ति श्रीवास्तव	प्राध्यापक प्राणिशास्त्र
32.	डॉ. चारूलता राठौड़	प्राध्यापक प्राणिशास्त्र
33.	श्रीमती मीता बादल	सहायक प्राध्यापक गृहविज्ञान
34.	डॉ. पी.एन. राज	ग्रंथपाल
35.	श्री सी.एस.धाकड़	क्रीड़ा अधिकारी

क्र.	नाम	पदनाम
1	श्री राजाराम महावर	मुख्य लिपिक
2	श्री एस.एन. प्रजापति	लेखापाल
3	श्रीमती रूकमणी शर्मा	सहायक ग्रेड–2
4	श्री मनोज सक्सेना	सहायक ग्रेड–3
5	श्री सुनील कुमार	सहायक ग्रेड–3
6	श्रीमती रश्मि खरे	सहायक ग्रेड–3
7	श्री जे. पी. मिश्रा	प्रयोगशाला तकनीशियन
8	श्री एच. सी. मिश्रा	प्रयोगशाला तकनीशियन
9	श्री रमाकांत तिवारी	प्रयोगशाला तकनीशियन
10	श्रीमती डॉली खटवानी	प्रयोगशाला तकनीशियन
11	श्रीमती रानी मारन	प्रयोगशाला परिचारक
12	श्रीमती स्वाति भारद्वाज	प्रयोगशाला परिचारक
13	श्री भूपेन्द्र मिश्र	प्रयोगशाला परिचारक
14.	प्रहलाद पराड़कर	भृत्य
15.	श्री मुकेश कुमार अहिरवार	भृत्य